Fortnightly per copy Rs. 4/- only

ओ३म्

03rd December 2018

आर्य जीवन
ఆర్య జీవన్

संस्कृति संरक्षण व सामाजिक परिवर्तन का संकल्प
హింది - తెలుగు ద్విభాషా పక్ష పత్రిక

Date of Publication 2nd & 17th of every Month, Date of posting 3rd and 18th of every month

* श्रद्धाञ्जली *

आर्य हुतात्मा
धर्मवीर पंडित श्यामलाल जी

धर्मवीर श्यामलाल जी १९०३ ई. मेंभालकी में पैदा हुए। इनके पिता का नाम भोलाप्रसाद और माता का छोटाबाई था। आपका सम्वन्ध व्राह्मण कुल से था। इनकी प्रारम्भिक शिक्षा मराठी में हुई। ये अपने माता-पिता के अनुसार मूर्तिपूजक थे और कट्टर धार्मिक थे। इनके एक मामा आर्य समाजी थे, जिनके प्रभाव से श्यामलाल के ज्येष्ठ भ्राता श्री वंसीलाल वैदिक धर्म अनुयायी और स्वामी दयानन्द के अन्तःकरण से भक्त वन गए। आगे चल कर ये आर्य समाज के सर्वप्रिय नेता भी कहलाने लगे। आरंभ में तो श्यामलाल जी आर्य समाज से दूर-दूर रहते थे परन्तु वाद मे यह इस धर्म से इतने प्रभावित हुए कि इन्होंने आजीवन वैदिक धर्म के प्रचार में अपने आपको लगा दिया। गुलवर्गा में आपके ही प्रयासों से आर्य समाज की स्थापना हुई। वे स्वयं इस समाज के मंत्री वन कर कार्य संचालन करते रहे। १९२५ ई. में वकील वने और उदगीर में वकालत करने लगे। निजी जीविकोपयोगी कार्य करते हुए प्रचार कार्य भी करते थे। १९२३ ई. में इन्हें चर्म-रोग लग गया और इतना

वढ़ा कि पूरा शरीर फूल गया। रोग निवारणार्थ आप लाहौर गए। अभी आप लाहौर में ही थे कि १९२६ ई. में स्वामी श्रद्धानन्द शहीद हो गए। स्वामी जी के इस वलिदान का प्रभाव इन पर अत्यधिक पड़ा। लाहौर से वापस आकर उदगीर में आर्य समाज की स्थापना की और प्रतिज्ञा की कि आजीवन वैदिक धर्म का प्रचार करेंगे। उदगीर के तत्कालीन मुसलमन तहसीलदार ने स्थानीय मुसल्मानों को प्रेरित कर इनके मकान पर आक्रमण करवा दिया, परन्तु यह आक्रमण विफल रहा। आर्य समाज उदगीर की स्थापना के वाद आपके अथक प्रयासों ये विजय-दशमी के अवसर पर प्रथम वार जूलूस निकाला गया। होली के जुलूस के अवसर पर आप पर आक्रमण किया गया पर आप वच गए। श्यामलाल जी ने अछूतों के लिए एक पाठशाला, एक व्यायाम-शाला तथा एक निःशुल्क चिकित्सालय भी स्थापित किया।

१९२८ ई. में उदगीर आर्य समाज का वार्षिकोत्सव हुआ और इसी के बाद पुलिस आपका पीछा करने लगी। इसी वर्ष धारा १०४ के आधीन आप पर झूठा मुकदमा चलाया गया और आपसे दो हज़ार की जमानत और सुचलका लिया गया। श्यामलाल जी उदगीर से बाहर निकल कर भालकी, कल्याणी, औराद शाहजहानी, लातूर तथा औसा आदि स्थानों पर प्रचार करने लगे। कई बार मुसल्मानों ने आप पर आक्रमण किया, और कई ऐसे अवसर आए जब कि हिन्दुओं ने आपको अपने पास आश्लय देना अस्वीकार किया। आपने कई रातें मार्ग पर चलते बिताई और दिन में फिर प्रचार कार्य किया। १९३५ ऊ. में माणिकनगर की यात्रा के अवसर पर मुसल्मानों न आप पर छुरा घोंप देने का प्रयत्न किया पर एक नवयुवक बीच में आया, स्वयं जख्मी हुआ और इन्हें बचा लिया। १९३८ ई. में इन पर पुलिस ने एक झूठा मुक़दमा चलाया और न्यायालय ने इन्हें दीर्घकालिक दण्ड दिया। अभी आप कारावास में दण्ड भोग ही रहे थे कि १६-१२-१९३९ को इनका देहान्त हो गया।

జిల్లా స్థాయి వైదిక విజ్ఞాన పరీక్ష

నిజామాబాద్ సాంస్కృతికం, న్యూస్‌టుడే: ఇందూరు ఆర్యసమాజ్-గ్రంథాలయం ఆధ్వర్యంలో ఆదివారం జిల్లా కేంద్రంలోని కస్బాగల్లీ సమాజ్ ప్రాంగణంలో జిల్లా స్థాయి వైదిక విజ్ఞాన పరీక్షను నిర్వహించారు. పలు విద్యాసంస్థలకు చెందిన విద్యార్థులు ఇందులో పాల్గొన్నారు. ఈ సందర్భంగా అధ్యక్షుడు వెంకటనర్సయ్య, పర్యవేక్షకులు ఆచార్య వేదమిత్ర, గ్రంథాలయ అధ్యక్షుడు మల్లికార్జున్ మాట్లాడారు. విజేతలకు వచ్చే ఆదివారం (ఈ నెల 18న)బహుమతులను అందజేస్తామన్నారు. ఈ కార్యక్రమంలో రామలింగం, నారాయణ, విజయ్ కుమార్, శ్రావణ్‌కుమార్, రాజేశ్వర్ తల్లిదండ్రులు, విద్యార్థులు పాల్గొన్నారు.

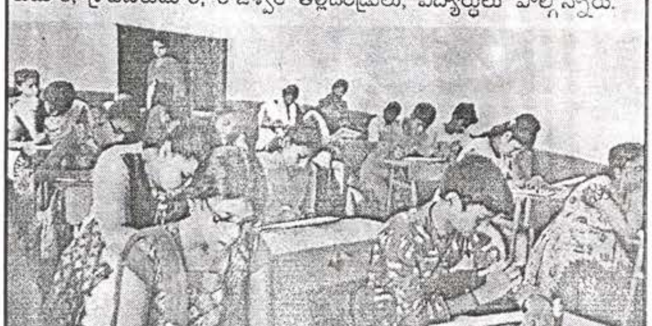

నిజామాబాద్‌లో వైదిక విజ్ఞాన పరీక్ష రాస్తున్న విద్యార్థులు

ఆర్య సమాజము నిజామాబాద్‌లో సత్యార్థ ప్రకాశము తృతీయ సముల్లాస ప్రతియోగిత మరియు వైదిక విజ్ఞాన పరీక్షలు నిర్వహించడము జరిగినవి అందులో పాల్గొన్న విద్యార్థులకు ప్రథమ, ద్వితీయ, తృతీయ పురస్కారములను సమాజాధ్యక్షుల చేత అందజేయడం జరిగినవి మరియు మహర్షి దయానంద బలిదాన దినోత్సవాన్ని అత్యంత వైభవోపేతముగా జరుపుకోవడం జరిగినది.

దయానంద సరస్వతి బలిదాన దినం

విజేతలకు బహుమతులు అందిస్తున్న దృశ్యం

విద్యార్థులతో వైదిక యజ్ఞం నిర్వహిస్తున్న ఆర్యసమాజ ప్రతినిధులు

చంద్రశేఖర్‌కాలనీ: నగరంలోని కస్బాగల్లిలోని ఆర్యసమాజంలో మహర్షి దయానంద సరస్వతి బలిదానం దినాన్ని సోమవారం నిర్వహించారు. ఈ నెల 11న విద్యార్థులకు నిర్వహించిన వైదిక జనరల్ నాలెడ్జి పోటీ పరీక్షల్లో గెలుపొందిన విజేతలకు ఈ సందర్భంగా ముఖ్య అతిథులు హరిదా రచయితల సంఘం అధ్యక్షుడు ఘనపురం దేవేందర్, గోరక్షా విభాగ్ అధ్యక్షుడు రాజేశ్వర్ గుప్తా, ఆర్యసమాజం ప్రతినిధులు డి.వెంకటనర్సయ్య, ఆచార్య వేదమిత్ర, దుడక రామలింగం ఆర్య బహుమతులు అందజేశారు. ఆర్. లక్ష్మీప్రసన్న, ఎస్.రుచిత, ఎం.సందీప్ మొదటి మూడు స్థానాల్లో నిలిచారు. వీరితో పాటు మరో పది మందికి నగదు బహుమతులు అందించారు. మొదట విద్యార్థులతో వైదిక యజ్ఞం నిర్వహించారు. మహర్షి దయానంద సరస్వతి వేషధారణలో విద్యార్థులు ఆకట్టుకున్నారు. ప్రణవకుమార్ ఆర్య, పెంటం మల్లికార్జున్, సిహెచ్.నారాయణ, మంకాళ విజయకుమార్‌ఆర్య, రాధాకృష్ణ పాఠశాల హెచ్‌ఎం రాజేశ్వర్ తదితరులు పాల్గొన్నారు.

कर्म ही भाग्य निर्माता है

-खुशहाल चन्द्र आर्य

किसी चीज की पूजा करने का तात्पर्य होता है, उस चीज का सदुपयोग करना अथवा उसकी प्राप्ति करना । यहाँ लक्ष्मी की पूजा का मतलब, जिन कार्यों के करने से लक्ष्मी की प्राप्ति हो, उन कार्यों को करना । जैसे सरस्वती की पूजा यानि प्राप्ति विद्या पढ़ने से होती है, वैसे ही लक्ष्मी की पूजा या प्राप्ति सच्ची लगन से मेहनत, परिश्रम व पुरुषार्थ करने से होती है । लक्ष्मी को अर्जित करना हो तो आप बुद्धिपूर्वक लगन के साथ परिश्रम व मेहनत करो आपको लक्ष्मी अवश्य प्राप्त हो जायेगी । अधिकतर लोग लक्ष्मी की प्राप्ति भाग्य से मानते है । उनका कहना है कि मेहनत और पुरुषार्थ से तो मनुष्य ज्यादा से ज्यादा पेट ही भर सकता है लेकिन लक्ष्मी तो जिसके भाग्य में लिखी होती है उसीको मिलती है । यानि यह ईश्वर की इच्छा पर निर्भर है, कर्म इस मामले में आड़े नहीं आता । यह उनका कहना वैदिक सिद्धान्तों से सही नहीं है । हमने कितने ही लक्ष्मीपतियों को देखा है जो पहले एक साधारण व्यक्ति ही थे, फिर अपनी बुद्धि पूर्वक, ईमानदारी के साथ मेहनत व पुरुषार्थ करने से धीरे-धीरे लक्ष्मीपति बन गये ।

उदाहरण के तौर पर सर छाजूराम जो हरियाणा के एक छोटे से गांव अलखपुरा में इतने गरीब जाट परिवार में पैदा हुए थे जिसके बचपन में पेट भरने के लिए दो समय की रोटी भी नसीब नहीं थी । उसने बड़ी कठिनाई से तीन चार क्लास तक की पढ़ाई गांव की ही पाठशाला से की और फिर चौदह पन्द्रह वर्ष की अल्पायु में ही उसको मकान बनाने वाले मिस्त्री के नीचे ईंट व मिट्टी पकड़ाने का काम करना पड़ा । एक दिन बच्चा होने के नाते उससे मिस्त्री को कुण्डी (जिसमें पानी व मिट्टी धुली हुई होती है) पकड़ाते समय कुछ घुली हुई मिट्टी नीचे गिर गई । मिस्त्री ने गुस्सा में आकर न आव देखा न ताव कर्णी जो उसके हाथ में थी, उस छोटे बच्चे छोटूराम के माथे में मार दी । उसको मारते ही छोटूराम के मन में अपने इस अपमानित जीवन से घृणा उत्पन्न हो गई और यह भाव, जागृत हुए कि इस बेईज्जत जीने से तो कहीं बाहर जाकर भूखों मरना ही कहीं अच्छा है । इस काम से छुट्टी पाने के बाद अपनी माँ के पास आकर दुखित भाव से बोला, माताजी आप किसी प्रकार से भी पन्द्रह बीस रुपयों की व्यवस्था कर देवें, मैं कलकत्ता जाऊँगा और वहाँ जैसे मेरे गाँव के वैश्यभाई रुपये कमाते हैं तो क्या मैं नहीं कमा सकूंगा ? ईश्वर ने मुझे भी तो बल व बुद्धि दी है, मैं अपनी पूरी मेहनत और ईमानदारी से कलकत्ता जाकर काम करूँगा तो ईश्वर मुझे भी अवश्य सफलता देंगे । पहले तो माता ने अपने लाड़ले बच्चे को प्यार से गले लगाया और फिर बच्चे का दृढ़ निश्चय देखकर माता ने एक दो बर्तन बेचकर पन्द्रह बीस रूपयों की व्यवस्था कर दी और अपने होनहार बच्चे को ईश्वर से प्रार्थना करते हुए कलकत्ता के लिए विदा कर दिया । यह बच्चा इतना मेहनती, बुद्धिमान्, सच्चा, ईमानदार व कर्तव्य परायण निकला कि कलकत्ता आते ही किसी अंग्रेज ऑफिसर को अपने विनम्र व्यवहार से खुश करके एक हैसियन जूट मील में चौकीदारी का काम करना शुरू कर दिया । उसी दिन से उसके जीवन का उत्थान होना आरम्भ हो गया । उसी आफिसर की सहानुभूति से वह हैसियत का अच्छा बड़ा दलाल बन गया और देखते ही देखते अपनी कार्य कुशलता के बल पर कलकत्ता के अच्छे धनी मानी लोगों में अपना एक विशेष स्थान बना लिया । कलकत्ता महानगर में खूब अच्छा व्यवसाय करके खूब धन कमाया, गाड़ी ली, कई मकान बनाये, खूब प्रतिष्ठा प्राप्त की और उसके गुणों व कार्यों को देखकर सरकार ने उसे 'सर' की उपाधि से सम्मानित किया । दान की प्रवृत्ति होने से उसने अनेकों स्कूल, कॉलेज, पाठशाला, अनाथालय व गउशाला खुलवाकर बड़ा यश कमाया । यही कहानी सभी धनी लोगों के जीवन में घटित होती है । बिड़ला व डालमिया भी एक साधारण परिवार में उत्पन्न होकर अपने परिश्रम, ईमानदारी, लगन व पुरुषार्थ से भारत के शीर्ष धनाढ्य लोगों में गिने गये ।

जो व्यक्ति लक्ष्मी को भाग्य की बात मानते है, उनको यह मालूम होना चाहिए कि भाग्य भी तो इस जन्म व पूर्व जन्म में किये हु शुभ कर्मों का संचय (संग्रह) ही होता है । इसको अपने आप बन जाना मानना सिर्फ पुरुषार्थ हीन लोगों की कोरी कल्पना मात्र है । ईश्वर अपनी इच्छा से किसी को भाग्यवान् या भाग्यहीन नहीं बनाता । वह तो जीव के अच्छे व बुरे किये हुए कर्मों का फल ही देता है । ईश्वर सब विषयों से परे होने के कारण, उसकी न कोई इच्छा होती है और न किसी से राग (लगाव) और न किसी से द्वेष होता है । उसका हर काम न्याययुक्त और पक्षपातरहित होता है । जीव जैसा भी कर्म शुभ या अशुभ करेगा उसी के अनुसार ईश्वर फल देगा । गीता में भगवान् श्रीकृष्ण ने बिल्कुल ठीक कहा है । 'अवश्यमेव भोक्तव्यम्, कृतं कर्म शुभाशुभम् ।'

आपको यह जानकर आश्चर्य भी हो सकता है कि वैदिक सिद्धान्तों के अनुसार 'य तो व्रतानि पशपशे' ईश्वर भी अपने नियम व व्यवस्था में बंधा हुआ है । वह जीव को अपनी इच्छा से कम या ज्यादा फल दे ही नहीं सकता । यदि ऐसा न करे यानि अपनी इच्छा से किसी को कम और किसी को ज्यादा फल देवे तो उसकी न्याय व्यवस्था में दोष आ जाता है । प्रसंगवश यहां यह लिख देना भी उचित है कि कई हमारे पौराणिक भाई कह देते हैं कि ईश्वर सर्वशक्तिमान् होने से वह अपने भक्तों को खुश करने के लिए या उनका दुःख हरण करने के लिए नौकर, नाई आदि भी बनता

है। यह भी असम्भव है, इससे भी ईश्वर की न्याय व्यवस्था को आघात पहुँचता है। वेदोद्धारक महर्षि दयानन्द ने सर्वशक्तिमान् का अर्थ यह बतलाया है कि ईश्वर अपने काम में किसी दूसरे का सहयोग नहीं लेता। वह सब काम अपनी शक्ति व सामर्थ्य से स्वयं ही करता है। उसी विषय को आगे बढ़ाते हुए मैं लिखना चाहता हूँ कि भाग्य किसी का भी ईश्वर अपनी इच्छा से नहीं बनाता। भाग्य मनुष्य अपने कर्मों से स्वयं बनाता है और उसका फल ईश्वर की न्याय व्यवस्था के अनुसार जीव को स्वयं को ही भोगना पड़ता है। कर्म करने में जीव स्वतंत्र है और फल ईश्वर अपनी न्याय व्यवस्था के अनुसार उसको देता है यानि जीव फल भोगने में परतन्त्र है।

लक्ष्मी या धन क्या चीज है मैं आपको एक उदाहरण देकर समझाने की कोशिश करूँगा। जैसे एक मजदूर एक दिन में पच्चास रुपये कमाता है। उसमें से वह पच्चीस रुपये खाने-पीने, पहनने व रहने में खर्च कर देता है बाकी पच्चीस रुपये बचा लेता है। यह पच्चीस रुपये एक साल में नौ हजार रुपये बन जाते हैं। इसी नौ हजार रुपयों को हम उसकी लक्ष्मी, धन या पूंजी कहते हैं। सही रूप में देखा जाये तो यह एक साल का संग्रह किया हुआ श्रम ही है। यदि वह अपनी पुरी कमाई पच्चीस रुपये प्रतिदिन खर्च कर देता तो क्या उसके पास नौ हजार रुपये बचे रहते ? यही करने के बाद जो बचे हुए रुपये हैं, उसी को हम धन या लक्ष्मी कहते हैं। यह संग्रहित परिश्रम ही धन या लक्ष्मी होता है, इसके अलावा और कुछ नहीं। वैसे ही पूर्व जन्म में जीव जो शुभ या अशुभ कर्म करता है, उसका फल कुछ तो उसी जन्म में उसको मिल जाता है और कुछ शुभ या अशुभ कर्मों का फल उस जन्म में जीव जो नहीं भुगत पाता वहीं संचित शुभ या अशुभ कर्म अगले जन्म में सौभाग्य या दुर्भाग्य के रूप में जीव को भुगतने पड़ते हैं। यदि किसी मनुष्य के संचित शुभकर्म भुगतने बाकी रह जाते हैं तो वह सौभाग्यशाली कहलाता है और जिसके बुरे कर्म भुगतने बाकी है वह दुर्भाग्यवाला कहलाता है जो उसको इन जन्म में भुगतने पड़ते हैं। यह शुभ या अशुभ कर्म जो हमारे ही किये हुए होते हैं उसका हमें जो प्रतिफल मिलता है यही हमारा भाग्य कहलाता है, इसलिए यह भाग्य हमारे ही किये हु कर्मों का फल हुआ न कि ईश्वर की इच्छा।

वेद के इस मन्त्र से कर्म का सिद्धान्त स्पष्ट हो जाता है।

कृतं मे दक्षिणे हस्ते, जयो मे सव्य आहितः।

ईश्वर जीव से कहता है कि तू दाहिने हाथ से कर्म व पुरुषार्थ कर तो बायें हाथ में विजय, सफलता निश्चित है। मैं किसी से भी राग, द्वेष, अन्याय व पक्षपात नहीं करता।

चिन्तन-मनन

आज के समय में एक अच्छे या बुरे की परिभाषा उसके कार्यों से नहीं अपितु निजी विचारों के आधार पर होती है। अलग-अलग विचारों के आधार पर कुछ लोग जिसे अच्छा कहने में लगे हैं, उसी को कुछ लोग बुरा भी कह रहे हैं।

एक झूठे आदमी के लिए हम तब अच्छे हैं जब हम उसकी हाँ में हाँ मिलाकर उसका साथ दें और उसी के लिए तब हम बड़े बुरे बन जाते हैं जब हम झूठ में उसका साथ देना बन्द कर देते हैं।

हम एक गलत काम करने वाले आदमी की नजरों में तब तक बुरे हैं जब तक कि हम गलत कार्यों में उसका साथ नहीं दे देते। हम जिस दिन से उसका साथ देना शुरू कर देंगे उसी दिन से उसकी नजरों में हमारी परिभाषा एक अच्छे आदमी की हो जाएगी।

अतः आपकी अच्छाई भी कई लोगों को रास नहीं आयेगी और बुराई का तो कहना ही क्या ? इसलिए जब आप "क्या कहेंगे लोग" पर ध्यान ही नहीं देंगे तो फिर ''क्यों कहेंगे लोग ? आपका काम है सही रास्ते पर चलना, बेहिचक, बेपरवाह।

इस जीवन काल में और मृत्यु के बाद भी धर्म ही हमारा साथ देता है। अन्त समय में हमें सब छोड़ना पड़ता है और सब हमें छोड़ देते हैं उस वक्त भी धर्म ही हमारा साथ देता है। नीति में कहा है - जीवन का मित्र आहार है, रूप का मित्र यौवन है, यौवन का मित्र पुरुषार्थ है, पुरुषार्थ का मित्र परोपकार है, रोगी का मित्र वैद्य है और मरने वाले का मित्र ....? मरने वाले का मित्र धर्म है।

जहाँ पर स्वभाव में मधुरता न हो वहाँ पर पद-प्रतिष्ठा कोई मायने नहीं रखती और जिसका स्वभाव मीठा है उसे मान-सम्मान के लिए किसी पद-प्रतिष्ठा पर निर्भर नहीं रहना पड़ता। स्वभाव ही किसी आदमी की व्यक्तिगत पहचान है। प्रभाव से आप किसी को नहीं जीत सकते, अच्छे स्वभाव से सबको जीता जा सकता है।

यहाँ पर अच्छे आदमी की संज्ञा सिर्फ उसे दी जाती है, जिसका स्वभाव अच्छा हो। बड़ों से सम्मान के साथ और छोटों से प्रेम पूर्वक बात करना यह श्रेष्ठ स्वभाव के दो प्रमुख गुण हैं। अपने स्वभाव को इतना कोमल बनाओ कि किसी भी आदमी को आपसे बात करने में संकोच न हो।

कठोर व्यवहार जीवन के प्रगति पथ पर एक बाधा है। छोटी-छोटी बातों को लेकर दूसरों पर कटाक्ष करते रहना यह भी अच्छी बात नहीं है। आज का आदमी अपने हाव-भाव की बड़ी परवाह करता है मगर अपने स्वभाव की नहीं।

अतः अपने स्वभाव को अच्छा रखो ताकि आप सबके प्रिय बन सकें। चेहरा कितना भी सुन्दर क्यों ना हो स्वभाव ही प्रभाव डालता है।

–आचार्य धर्मराज

'भारत में उत्पन्न सब लोगों को इसकी उन्नति तन, मन व धन से करनी चाहिये'

–मनमोहन कुमार आर्य

हम बहुधा देखते कि कुछ स्वदेशवासियों व संस्थाओं में स्वदेश भक्ति कम है अथवा नहीं है। देश और मातृभूमि को सबसे ऊंचा व बड़ा नहीं माना जाता। ऐसे भी लोग हैं जो विदेशी मत-मतान्तरों व उनके अनुसार जीवन जीने में ही अपने को गौरवान्वित अनुभव करते हैं। ऐसे लोगों का आचार, विचार व व्यवहार विदेशी लोगों के समान देखा जाता है। यहां तक देखने में आता है कि बहुत से लोगों ने अपने खान-पान व विवाह आदि के नियम भी विदेशी लोगों का अंधानुकरण कर उनके अनुरूप बना लिये हैं। ऐसे लोगों में अधिकांश अपने देश के ज्ञानवान व मानवता के पुजारी ऋषि-मुनि आदि पूर्वजों की प्रशंसा तो क्या करेंगे अपितु उसके स्थान पर इनकी पेट भर कर निन्दा करते हैं। ऐसे लोगों को यूरोप आदि देशों के लोग व उनके मिथ्या आचार-विचार भी भारत के महर्षियों के मानवता के हितकारी नियमों से अधिक अच्छे लगते हैं और यह उनकी दिल भर कर प्रशंसा करते हैं। इनका भ्रम व मिथ्या विश्वास है कि आर्यावर्तीय लोग सदा से मूर्ख चले आये हैं। इन लोगों को वेदों, दर्शन एवं उपनिषद आदि ग्रन्थों का कोई ज्ञान नहीं होता परन्तु विदेशी लोगों की देखा देखी इन सत्य शास्त्रों की प्रशंसा छोड़कर निन्दा करने में प्रवृत्त रहते हैं। ऐसे आचार-विचारों की समालोचना करते हुए महर्षि दयानन्द जी ने अपने प्रसिद्ध ग्रन्थ सत्यार्थप्रकाश के ग्यारहवें समुल्लास में लिखते हैं कि भला जब आर्यावर्त देश में उत्पन्न हुए हैं, इसी देश का अन्न-जल खाया पीया, अब भी खाते-पीते हैं, तब अपने माता-पिता-पितामह के मार्ग को छोड़ दूसरे विदेशी मतों पर अधिक झुक जाना, इस देश की संस्कृत विद्या से रहित होने पर भी अपने को विद्वान प्रकाशित करना, अंग्रेजी आदि पढ़कर पण्डिताभिमानी होकर अविवेकपूर्वक व्यवहार करना मनुष्यों का स्थिर और वृद्धिकारक काम क्योंकर हो सकता है?

जापान, चीन, रूस, अमेरिका व इंग्लैण्ड आदि देशों के लोगों को देखते हैं तो उनमें स्वदेशभक्ति का गुण समग्रता कई दृष्टि से शायद हमसे अधिक दिखाई देता हैं। वहां जो दूसरे देशों के लोग रहते हैं वह भी उन देशों के नियमों व आचार विचारों का पालन करते हैं परन्तु भारत में ऐसा देखने में नहीं आता। इन बातों पर विचार करने पर हमें लगता है कि यह वेदों व प्राचीन भारतीय संस्कृति के संस्कारों के न होने के कारण होता है। जो व्यक्ति जिस देश में उत्पन्न हुआ है उसे वहां के पूर्वजों की परम्पराओं व ज्ञान एवं दर्शन का सूक्ष्मता से अध्ययन करना चाहिये। विदेशी मतों व स्वदेश के धार्मिक व सांस्कृतिक ज्ञान व परम्पराओं का अध्ययन भी करना चाहिये और सत्य को अपनाना व असत्य का त्याग करना चाहिये। हमारे देश में न तो ऐसे नियम बनाये गये हैं और न इसके प्रति जागृति ही देखने को मिलती है। सभी लोग आज कल सुख सुविधाओं और भोग प्रदान संस्कृति ड्रिंक, ईट एण्ड बी मैरी को महत्व देते हैं। वह भूल जाते हैं कि ड्रिंक एण्ड ईट उनके हाथ में है परन्तु इसका परिणाम बी मैरी उनके अपने हाथ में नहीं है। इस विचारधारा का परिणाम अधिक महत्वाकांक्षी होना, दुःख, रोग व अल्पायु आदि के रूप में सामने आता है।

सबसे उत्तम मनुष्य वह होता है जो बहुपठित हो और प्राचीन ग्रन्थों का आलोचनात्मक अध्ययन करता हो। यह सत्यासत्य का निर्णय करने के लिये आवश्यक है। जिस मनुष्य ने अन्य ग्रन्थों के अलावा वेद, दर्शन, उपनिषद, सत्यार्थप्रकाश, प्रक्षेपरहित मनुस्मृति सहित शुद्ध रामायण एवं शुद्ध महाभारत आदि ग्रन्थों को भी पढ़ा है, वही विवेकी बन सकता है। इन ग्रन्थों के अध्ययन से ही मनुष्य सत्य व असत्य को जान सकता है। स्कूली किताबों व ज्ञान-विज्ञान को पढ़कर मनुष्य विद्वान व विवेकी मनुष्य नहीं बनता। इसके लिये स्वाध्याय अत्यन्त आवश्यक है। यदि कोई अधिक ग्रन्थ न पढ़ सके तो उसे सृष्टि विषयक तथ्यों एवं अपने कर्तव्यों के ज्ञान के लिये सत्यार्थप्रकाश तो पढ़ना ही चाहिये। यदि पूरा न पढ़ सके तो इस ग्रन्थ के आरम्भ के दस या ग्यारह समुल्लास तो अवश्य ही पढ़ने चाहिये। इसके बाद वह आगे पढ़कर अन्य विद्या-अविद्यायुक्त मतों का अध्ययन भी कर सकता है और अपनी विवेक बुद्धि से सभी मतों के गुण व दोषों का निर्णय कर सकता है। जहां तक ईश्वर व जीवात्मा विषयक सत्य ज्ञान का प्रश्न है वह तो केवल वेद, उपनिषद, दर्शन, सत्यार्थप्रकाश, आर्याभिविनय, ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका आदि ग्रन्थों को पढ़कर ही प्राप्त होता है। इसके साथ ही मनुष्य को विशिष्ट विद्वानों के भिन्न-भिन्न विषयों पर व्याख्यान भी सुनने चाहियें। हमें अपने जीवन में स्वाध्याय, विशिष्ट विद्वानों की संगति एवं उपदेश श्रवण का अवसर मिला है। हमें इससे लाभ हुआ है। यदि हम उपर्युक्त ग्रन्थों का स्वाध्याय-अध्ययन व सच्चे निस्वार्थी विद्वानों की संगति नहीं करेंगे तो हम सत्य ज्ञान को कदापि प्राप्त नहीं हो सकते। यही

कारण है कि यत्र-तत्र की अनेक भाषाओं की पुस्तकें पढ़कर कोई ज्ञानी देखने में नहीं आ रहा है। वैदिक साहित्य के अध्ययन एवं योगाभ्यास आदि से मनुष्य ज्ञानी होता है।

हम यह भी अनुभव करते हैं कि वर्तमान युग का पठित व्यक्ति कर्म-फल सिद्धान्त से सर्वथा अपरिचित वा अनभिज्ञ है। कर्म-फल सिद्धान्त को जानने के लिये हमें ईश्वर, जीवात्मा और इस सृष्टि की उत्पत्ति के कारण, जीवात्मा के उद्देश्य व लक्ष्य को जानना होगा। ईश्वर सच्चिदानन्दस्वरूप, निराकार, सर्वव्यापक, सर्वज्ञ, सर्वशक्तिमान, सर्वान्तर्यामी, जीवों को उनके पूर्वजन्मों को कर्मानुसार जन्म देने वाली व उनके भूतकाल व वर्तमान काल के कर्मों का सुख-दुःख रूपी फल देने वाली सत्ता है। उसी ईश्वर ने जीवों के कल्याण व उनके कर्मानुसार उन्हें सुख-दुःख व मोक्ष प्रदान करने के लिये इस सृष्टि की रचना की है। वही ईश्वर इसका पालन कर रहा है तथा उसी से इस सृष्टि की यथासमय प्रलय होनी है। प्रलय के बाद निध ारित अवधि व्यतीत होने पर परमात्मा पुनः अपने सर्वज्ञ ज्ञान व सामर्थ्य के अनुसार सृष्टि की रचना कर अमैथुनी सृष्टि में जीवों को जन्म देते हैं और मनुष्यों को वेदज्ञान भी सुलभ कराते हैं। सृष्टि का दूसरा अनादि व नित्य पदार्थ जीवात्माएक चेतन, अणु-परिमाण, एकदेशी, सूक्ष्म, आंखों से न दीखने वाला, अल्पज्ञ, इच्छा-द्वेष-सुख-दुःख से युक्त, सुख प्राप्ति के लिए प्रयत्नशील एक अनादि, नित्य, अविनाशी, अनुत्पन्न, अमर, सनातन सत्ता है। ईश्वर संख्या में एक है और जीवात्माओं की संख्या अनन्त है। पूर्वजन्म के कर्मानुसार ईश्वर जीवों को इनकी जाति (मनुष्य, पशु, पक्षी आदि), आयु व भोग (सुख-दुःख) निर्धारित कर भिन्न भिन्न योनियों में जन्म देता है। मनुष्य जन्म भोग व अपवर्ग (मोक्ष) के लिए होता है। अपवर्ग मोक्ष को कहते हैं जो योग-साधना व सत्कर्मों को करके और ईश्वर का साक्षात्कार करने पर प्राप्त होता है। प्रकृति सत्व, रज व तम गुणों वाली त्रिगुणात्मक सूक्ष्म परिणामिनी व विकारिणिनी सत्ता है। यह प्रकृति ही सृष्टि का उपादान कारण है। ईश्वर इस प्रकृति को ही अपने ज्ञान व शक्ति से रूप व नाम वाली सृष्टि की रचना करते हैं। यह जान लेने के बाद कर्म-फल सिद्धान्त समझा जा सकता है। जीवात्मा अनादि, अविनाशी सत्ता होने के कारण बार-बार कर्मानुसार जन्म व मृत्यु को प्राप्त होकर पूर्वजन्म-जन्म-परजन्म के चक्र में फंसी रहती है। मनुष्य योनि उभय योनि होती है जिसमें मनुष्य शुभ-अशुभ कर्मों को करता है। ईश्वर न्यायाधीश के रूप में उसके प्रत्येक कर्म का फल देने के लिये उसे उसके कर्मों के अनुसार नाना योनियों में जन्म देते हैं। ईश्वर द्वारा जीव के प्रत्येक शुभ व अशुभ कर्म का सुख व दुःख रूपी फल देना ही कर्म-फल सिद्धान्त कहलाता है। यह शुभ कर्मों का शुभ अर्थात् सुख रूपी तथा अशुभ कर्मों का दुःख के रूप में होता है।

कोई भी मनुष्य दुःख नहीं चाहता। दुःख दूर करने के लिये विद्या प्राप्ति की आवश्यकता सहित दुष्कर्मों व अशुभ कर्मों का त्याग करना है। तभी जन्म जन्मान्तरों में सुख व शान्ति मिलेगी। यदि हम विद्या प्राप्ति व शुभ कर्मों का आचरण व अशुभ व असत्य कर्मों का त्याग नहीं करेंगे तो यह निश्चित है कि हमारा यह जन्म व परजन्म निश्चय ही दुःखों से पूरित होगा। अतः मनुष्यों को मत-मतान्तरों के दुष्चक्र में न फंस कर सत्य मत व वेदों की सत्य विचारध ारा का अध्ययन कर सच्चे ईश्वर, जीवात्मा व सृष्टि के स्वरूप को जानकर सद्कर्म व ईश्वरोपासना, परोपकार, यज्ञ, दान व विद्याप्रचार के कार्यों को ही महत्व देना चाहिये। इसी से उनका कल्याण हो सकता है।

देश के प्रायः सभी लोग सत्य ज्ञान वा विद्या से दूर हैं। इस कारण वह अपने कर्तव्यों से भी अपरिचित हैं। बहुत से लोग स्वदेश में उत्पन्न होकर अपने देश की धरती व इसकी वायु का सेवन करते हैं। इनसे उत्पन्न अन्न, दुग्ध, फल, निवास व सभी प्रकार की सुविधायें यहीं से प्राप्त करते हैं परन्तु अज्ञानवतावश अपने कर्तव्यों का निर्वाह न कर मिथ्या चक्रों में फंस जाते हैं। ऋषि दयानन्द ने सत्य व असत्य के स्वरूप से परिचित कराने तथा कर्तव्यों की प्रेरणा करने के लिये ही वेदों का प्रचार किया था और आर्यसमाज की स्थापना की थी। लोगों की बहुधा सत्य व वेद में प्रवृत्ति न होने के कारण देशवासियों ने वैदिक सत्य सिद्धान्तों पर ध्यान नहीं दिया। वह लार्ड मैकाले की शिक्षा पद्धति व धन, दौलत, सुख व सुविधाओं से आकर्षित होकर उसी में बह गये। इसका परिणाम यह हुआ कि देश में तेजी से जनसंख्या बढ़ी और सब लोगों को भोजन, वस्त्र, शिक्षा, निवास, चिकित्सा, रोजगार आदि सुविधायें समान रूप से न्यायपूर्वक सभी को नहीं मिल सकीं। आज देश में बड़ी संख्या में धन कुबेर हैं तो वहीं प्रतिदिन भरपेट भोजन से वंचित २० करोड़ से अधिक लोग हैं। यह संख्या अनेक देशों की जनसंख्या से भी अधि क हैं। देश के धनाड्य लोगों को इन निर्धन व साधनहीन लोगों की चिन्ता नहीं है। वर्तमान व्यवस्था से शायद सबको सामाजिक न्याय मिलना सम्भव नहीं है। इस स्थिति में इतना प्रचार तो सबको करना ही चाहिये कि जो इस देश में उत्पन्न हुआ है वह इस देश के प्रति अपने कर्तव्यों को जाने और विदेशी कुचक्रों व हानिकारक विचारधाराओं में न फंसे। देश से अविद्या व अन्धविश्वास भी दूर होने चाहिये और सभी सामाजिक परम्परायें सबके लिये कल्याणकारी एवं हितकारी होनी चाहिये जिससे भविष्य में हम उन दुःखों से बच सकें जो इससे पूर्व गुलामी के दिनों में हमें झेलने पड़े हैं। देश तभी संसार का उन्नत देश बनेगा जब इसके सभी लोग देशभक्त एवं स्वदेश के पूर्वज ऋषि-मुनियों तथा राम-कृष्ण-दयानन्द पर गौरव करने वाले होंगे।

पंच महायज्ञ पाँच कष्टों को काटने वाले होते हैं

-खुशहाल चन्द्र आर्य

हमारे त्यागी, तपस्वी, विद्वान्, ऋषि-मुनियों ने हर व्यक्ति को विशेषकर गृहस्थी को पाँच महायज्ञ नित्य सुचारू रूप से करने का आदेश दिया है। इस पाँच महायज्ञों से अनेकों लाभ तो हैं ही, पर विशेष लाभ यह है कि ये पाँचों यज्ञ पाँच किस्म के दुःखों व कष्टों को दूर करने वाले भी हैं। यानि इन यज्ञों से दुःखों व कष्टों का निवारण होता है। वे पाँच महायज्ञ यह हैं -

(१) ब्रह्मयज्ञ (२) देवयज्ञ (३) पितृयज्ञ (४) वलिवैश्वदेव यज्ञ (५) अतिथि यज्ञ है।

आत्मिक, शारीरिक, पारिवारिक, प्राकृतिक तथा अज्ञान से वढ़ती दूरियाँ। इन पाँच यज्ञों से पाँच कष्ट कैसे दूर होते हैं उनका संक्षिप्त परिचय यहाँ देते हैं।

१) **ब्रह्मयज्ञ :** ब्रह्मयज्ञ, आत्मा के दुःखों व कष्टों का निवारण करके, आनन्द की अनुभूति करवाता है। ब्रह्म यज्ञ का तात्पर्य है संध्योपसाना करना तथा वेद आदि धार्मिक पुस्तकों का स्वाध्याय करना। मनुष्य को ईश्वर की स्तुति, प्रार्थना व उपासना नित्य प्रातः व सायं करनी चाहिए। इससे आत्मा में आये विकार यानि ईर्ष्या, द्वेष, घृणा, हिंसा आदि दोष नष्ट हो जाते हैं और उनकी लगह प्रेम, दया, करुणा, परोपकार की भावना व आनन्द का संचार होता है। ईश्वर की स्तुतिप्रार्थनोपासना का तात्पर्य है कि हम किसी एक शान्त व स्वच्छ स्थान पर मन को सब ओर से हटाकर एकाग्र चित्त से अपनी दृष्टि को बाहर से हटाकर अन्दर डालकर पहले तो हम ईश्वर की स्तुति यानि प्रशंसा करें कि हे ईश्वर ! आप कितने सामर्थ्यवान हो और किस प्रकार सृष्टि की रचना करके उसका संचालन व संहार आप ही करते हो और जीवों को उनके किये अच्छे व बुरे कर्मों का फल भी आप ही अपनी न्याय व्यवस्था से किस प्रकार देते हो यह ध्यान करना चाहिए। फिर अपने पूर्ण सामर्थ्य के बाद जो काम नहीं बनता हो उसकी सफलता पाने के लिए और अधिक सामर्थ्य पाने की ईश्वर से प्रार्थना करनी चाहिए। फिर उसके पास बैठकर अपने अवगुणों व दोषों का ध्यान करना चाहिए और ईश्वर के गुणों का स्मरण करते हुए अपने दोषों को छोड़ना और ईश्वर के गुणोंको अपने जीवन में उतारने का प्रयत्न करना चाहिए। इस प्रकार मनुष्य ब्रह्म यज्ञ से अपने दुर्गुणों को छोड़ता है और ईश्वर के गुण दया, करुणा व परोपकार की भावना से जुड़ता हुआ अपने जीवन को पवित्र बनाता है। ब्रह्म यज्ञ में सन्ध्योपासना के साथ-साथ वेदों तथा धार्मिक पुस्तकों का स्वाध्याय करना भी आता है जिससे मनुष्य अपने ज्ञान को बढ़ाता है और वेदों के अनुसार चलकर मोक्ष की तरफ अग्रसर होता है, जो जीव का अन्तिम लक्ष्य है, जिसको पाने के लिए जीव अच्छे कर्म करते हुए मनुष्य योनि में आता है।

२) **देवयज्ञ :** यह महायज्ञ मनुष्य के शरीर से सम्बन्ध रखता है। देवयज्ञ का तात्पर्य है, हवन करके सब जड़ देवों को प्रसन्न करना होता है। विश्व में पाँच जड़ देवता हैं, जिनके नाम हैं, जल वायु, अग्नि, पृथ्वी और आकाश। इन पाँचों जड़ देवताओं का अग्नि मुख है। जिस प्रकार हम अपने शरीर को स्वस्थ रखने के लिए मुख से भोजन करते हैं और उस भोजन का पेट में जाकर रस रक्त आदि बनकर पूरे शरीर में जाता है और पूरे शरीर की कमियोंकी पूर्ति करता है, तब मनुष्य स्वस्थ रह पाता है। यही काम यज्ञ का है। वह भी अग्नि में जो घृत, सामग्री व समिधा आदि डाली जाती है। उसकी सुगन्ध अग्नि में डालने से हजार गुणा बढ़ जाती है और वह सुगन्ध जल, वायु, पृथ्वी व आकाश में फैल कर सबको सुगन्धित कर देती है जिससे सारा वातावरण शुद्ध और पवित्र हो जाता है। ऑक्सीजन की मात्रा बढ़ जाती है जो जीव के लिए लाभदायक है। हाइड्रोजन व नाइट्रोजन गैस कम हो जाती है जिससे मनुष्य का शरीर स्वस्थ रहता है यानि शरीर में जो रोग बीमारियाँ रहती हैं, वे दूर हो जाती हैं और शरीर स्वस्थ हो जाने से मनुष्यका जीवन सुखी व आनन्दित बन जाता है। इस प्रकार देव यज्ञ से शरीर के कष्ट दूर हो जाते हैं।

३) **पितृ-यज्ञ :** पितृ-यज्ञ से परिवार व गृहस्थ सुखी बनता है। जिस घर में पितर जनों का आदर व सम्मान होगा तथा उनकी सभी आवश्यकताएँ पूर्ण होगी तो उनके आशीर्वाद और उनके अनुभवों का लाभ परिवार को मिलेगा जिससे वह परिवार भी सुखी बना रहेगा। हमारे पौराणिक भाई मरे हुओं का श्राद्ध व तर्पण करते हैं परन्तु वेद हमें मरे हुए पितरों का श्राद्ध व तर्पण करना नहीं सिखाता बल्कि जीवित माता-पिता व वृद्ध जनों की श्रद्धापूर्वक सेवा, सुश्रूषा करके उनकी आत्मा को प्रसन्न रखना सिखाता है। जिसको श्राद्ध कहते हैं। अपने स्वभाव व व्यवहार से बड़ों के मन को तृप्त रखना ही तर्पण कहलाता है जो जीवितों का ही कर पाना सम्भव है। मरने के बाद करना एक अन्धविश्वास ही है।

४) **बलिवैश्व देव यज्ञ :** इस यज्ञ से सब जीवों को प्रसन्न रखना है। जो भूखा है उसको भोजन देना, जो प्यासा है उसको जल देना। जो असहाय है उसकी सहायता करना। जो जीव हम पर आश्रित है उसकी रक्षा करना ही बलिवैश्वदेव यज्ञ है। इस यज्ञ में जीव हिंसा का कोई स्थान नहीं है। जब सब जीव प्रसन्न रहेंगे तो प्रकृति भी शान्त रहेगी उसमें किसी प्रकार का प्रकोप नहीं होगा और सब जगह शान्ति बनी रहेगी।

५) **अतिथि यज्ञ :** घरों में जो वैमनस्य बना रहता है, आपस में वैर-भाव रहता है और परस्पर लड़ते-झगड़ते रहते हैं, अतिथि यज्ञ से ये सब समाप्त हो जाते हैं। अतिथि यज्ञ का तात्पर्य यह है कि गृहस्थियों के घर पर साधु, सन्त, संन्यासी, विद्वान्, वानप्रस्थी व गुरुकुलों के आचार्यों व ब्रह्मचारियों का आना-जाना बना रहना। जिस गृहस्थ में संन्यासी, वानप्रस्थी व विद्वानों का आदर-सत्कार होगा, उनके घरों में प्रवचन होंगे, उपदेश होंगे तो उस घर में परस्पर, विरोध व कटुता कभी भी नहीं रहेगा कारण परस्पर का विरोध व कटुता अज्ञान से उत्पन्न होती है। जब सन्यासियों और विद्वानों के सदुपदेश जिस घर में होगे उस घर से अज्ञानता दूर हो जायेगी और परस्पर का प्रेम सहृदयता का वातावरण बन जायेगा, जब पति-पत्नी, सास-बहु, भाई-भाई का झगड़ा कभी नहीं होगा और वह घर परस्पर के शुद्ध व्यवहार से स्वर्ग के समान बन जायेगा। इस प्रकार इन पाँच महायज्ञों से ऊपर लिखे इन पाँच दुःखों व कष्टों की निवृत्ति होती है। इसलिए हर व्यक्ति को विशेष कर हर गृहस्थी को अपना जीवन व गृहस्थ को सुखी बनाने के लिए ये पाँच महायज्ञ अवश्य करने चाहिए।

धर्म का वास्तविक स्वरूप

-खुशहाल चन्द्र आर्य

भारत के अनेक ऋषि, मुनि, संत, महात्मा व मनीषियों ने धर्म की व्याख्या विविध रूपों में की है । मनु महाराज के धर्म सम्बन्धी अनेक श्लोक मनुस्मृति में मिलते हैं जिनमें यह श्लोक सबसे अधिक प्रसिद्ध है, जिसको अधिकतर धर्मप्रेमी सज्जन जानते हैं-

१) धृतिःक्षमा दमोऽस्तेयं शौचमिन्द्रियनिग्रहः ।
धीर्विद्या सत्यमक्रोधो दशकं धर्मलक्षणम् ।।

इसमें मनु महाराज ने मानवीय दस गुणों को, जिसमें धैर्य, क्षमा संयम, अस्तेय (चोरी न करना), पवित्रता, ब्रह्मचर्य, बुद्धि, ज्ञान, सत्य और क्रोध न करना को धर्म के मुख्य अंग बताये हैं अर्थात् इन दस गुणों को जीवन में धारण करना ही धर्म है । मनु महाराज का धर्मसम्बन्धी श्लोक जो ज्यादा प्रचलित है वह यह है-

२) वेदोऽखिलो धर्ममूलं, स्मतिशीले च तद्विदाम् ।
आचारश्चैव साधूनामात्मनस्तुष्टिरेव च ।।

इस श्लोक में मनु महाराज ने धर्म का मूल वेदों को बताते हुए ऋषि प्रणीत स्मृति आदि ग्रन्थों में वर्णित कामों को करना, सत्पुरुषों के आचारण के अनुसार चलना तथा जिस काम को करने से आत्मा प्रसन्न होती हो, उसको धर्म माना गया है ।

३) इसी प्रकार मनु का धर्मसम्बन्धी यह कथन भी अति लोकप्रिय है -

''यस्तर्केणाऽनुसन्धत्ते स धर्मं वेद नेतरः''

जो तर्क अनुसंधान करता है, वह धर्म को जानता है, दूसरा नहीं इसका तात्पर्य यह हुआ, जो तर्क पर टिकता है वही धर्म होता है ।

४) इसके अलावा धर्म की व्याख्या महर्षि कणाद ने इसी भाँति की है-

''यतोऽभ्युदयनिःश्रेयससिद्धिः स धर्मः''

जिस कार्य को करने से लोक व परलोक सुधरता हो, वही धर्म है ।

५) धर्म के सम्बन्ध में गोस्वामी तुलसीदास ने भी कई जगह अपने विचार व्यक्त किये हैं । एक जगह ''दया धर्म का मूल है'' कहकर दया को ही धर्म का मुख्य अंग माना है । दूसरी जगह ''परहित सरिस धर्म नहिं भाई, पर पीड़ सम नहीं अधमाई'' अर्थात् दूसरों का हित करने के समान कोई धर्म नहीं और दूसरों को पीड़ा देने के समान कोई धर्म नहीं और दूसरों को पीड़ देने के समान कोई अधर्म नहीं, कहकर परोपकार को ही धर्म की संज्ञा दी है । इसी प्रकार तीसरा जगह तुलसीदास बाबा कहते हैं कि ''धरम न दूसरा सत्य समाना, आगम निगम पुरान बखाना'' यहाँ सत्य को ही प्रमुख धर्म माना है ।

महाभारत में युधिष्ठिर और यक्ष का प्रसंग जाता है जिसमें यक्ष ने युधिष्ठिर से पूछा कि धर्म का स्वरूप क्या है ? तब युधिष्ठिर (जो धर्म के विशेषज्ञ थे) धर्म जैसे जटिल प्रश्न को सरल बनाते हुए कहा कि ''धर्मस्य तत्वं निहितं गुहायाम्, महाजनों येन गतः स पन्थाः'' यानि धर्म का विषय इतना गहन है कि जिसको समझना साधारण मनुष्यों के लिए आसान नहीं है, इसलिए युधिष्ठिर न जनसाधारण के लिए सरल भाषा में मनु महाराज के कथन को स्पष्ट करते हुए कि ''जिस रास्ते से हमारे महापुरुष गए हैं, उसी रास्ते पर चलना ही धर्म है ।'' युधिष्ठिर का कहना तो इसलिए ठीक है कि उससे पहले जितने भी महापुरुष हुए थे वे सभी वेद के मार्ग पर चलने वाले थे । इसलिए युधिष्ठिर व मनुमहाराज के भाव तो वैदिक धर्म पर चलने के लिए ही थे, परन्तु बाद में हमारे पौराणिक भाइयों ने उसका अर्थ स्वार्थ सिद्ध के लिए महाजनों से तात्पर्य एक तो पूर्वजों के लिए लगा लिया दूसरा उस महापुरुषों के लिए भी लागाया यो युधिष्ठिर के बाद में हुए थे जैसे शंकराचार्य, माधवाचार्य, वल्लभाचार्य,तुलसी, सूर व नानक आदि इससे इन वैदिक सिद्धान्तों जैसे ईश्वर निराकार व सर्वव्यापी है इसलिए उसकी प्रतिमा नहीं हो सकती, ईश्वर अवतार नहीं लेता, सर्वशक्तिमान् ईश्वर एक ही है । गणेश विष्णु, ब्रह्मा, महादेव आदि उसके गुणवाचक नाम हैं, ईश्वर का मुख्य नाम ओ३म् ही है इसकी स्तुति प्रार्थनोपासना करनी चाहिए । (वर्ण) जाति व्यवस्था जन्म से न होकर गुण, कर्म, स्वभाव से बनती है । वृद्ध व विद्वानों का आदर-सत्कार, सेवा, आज्ञापालन करना व उसके आचरण का अनुकरण ही उसी पूजा है । वेदों को न मानने से, पौराणिक विचारों को बल मिला और देश में अज्ञान, अन्धविश्वास, पाखण्ड व आपस में जाति-पाँति का भेदभाव इतना बढ़ गया जिससे देश क्षतिग्रस्त ही नहीं बल्कि मृतप्रायः बन गया ।

धर्म जिज्ञासा को और आगे बढ़ाते हुए जब हम अपने गौरवमय इतिहास का अवलोकन करते हैं तो हमें मृत्युञ्जयी भीष्म पितामह का वह उपदेश भी महाभारत में मिलता है जब वे मृत्युशय्या पर पड़े हुए सूर्य के उत्तरायण आने की प्रतीक्षा कर रहे थे, उसी समय धर्मराज युधिष्ठिर भीष्म के पास आये और उन्होंने कहा कि हे पितामह ! आप धर्मज्ञ हो मुझे धर्म के विषय में कुछ जानकारी देवें, तब पितामह ने कहा, ''आत्मनः प्रतिकूलानि परेषां न समाचरेत्'' यानि अपनी आत्मा के विरुद्ध किसी के व्यवहार न करें अर्थात् जो व्यवहार अपने को अच्छा लगे वही व्यवहार दूसरों से करना ही धर्म है ।

आधुनिक समय के सन्त व विचारक महात्मा गांधी भी अपनी नित्य की प्रार्थना में यही कहा करते थे ''वैष्णव जन को तोने कहिये जो पीर पराई जाने रे ।'' इसका भाव यही है कि दूसरों के दुःख-सुख को अपने दुःख-सुख के समान समझना ही धर्म है ।

महर्षि देवदयानन्द ने अपने अमर ग्रन्थ ''सत्यार्थप्रकाश'' में धर्म को दो पक्षों में उपस्थित किया है । एक आत्मिक दूसरा सामाजिक । आत्मिक पक्ष में तो अधिकतर धर्मवेत्ताओं ने जो धर्म के सम्बन्ध में कहा है, उसी को और अधिक स्पष्ट करते हुए महर्षि ने कहा है कि अपनी आत्मा के समान ही दूसरों के सुख-दुःख, लाभ-हानि व

यश-अपयश को अपना समझना ही सच्चा धर्म है, यानि जो स्वयं को अच्छा लगे वह दूसरों के साथ भी करें और जो अपने को अच्छा न लगे वह दूसरों के साथ भी न करें। इससे समाज में परस्पर प्रेम व सहयोग की भावना में वृद्धि होती है। दूसरा धर्म के सामाजिक पक्ष को प्रस्तुत करते हुे यह कहा कि प्रत्येक व्यक्ति को चाहिए कि वह अन्यायी बलवान् से भी न डरे चाहे चक्रवर्ती राजा ही क्यों न हो और उसका अपनी शक्ति के अनुसार सदा विरोध भी करता रहे और न्यायकारी कमजोर से भी डरता रहे एवं उसका सदा समर्थन व सहयोग भी करता रहे। इससे समाज में अन्याय के पैर नहीं जमने पाते और न्याय की स्थापना सदा वनी रहने से मनुष्य निर्भय होकर अपने धर्म का पालन कर सकता है।

मैं विशेष चर्चा उस धर्म की करना चाहता हूँ जिसका उपदेश महर्षि दयानन्द ने किसी प्रसंग पर एक जुलाहा को दिया था। जिसमें जुलाहा ने स्वामीजी से पूछा था कि महाराज, मैं एक जुलाहा हूँ दिन भर कठिन परिश्रम करके अपने बच्चों का पालन पोषण करता हूँ। मेरे लिए पूजा-पाठ करना, संध्या हवन करना व योग साधना करना तो सम्भव नहीं, मेरे लिए कौन-सा ऐसा धर्म है जिसके करने से मेरा उद्धार हो सके, तब स्वामीजी ने कहा, तुम जिस व्यक्ति से तोलकर जितना सूत लेते हो, उसको सच्चाई व ईमानदारी से कपड़ा बुनकर उतना ही तौलकर दे दो उससे अपने परिश्रम का उचित मजदूरी के रूप में ले लो। तुम्हारा उद्धार इसी प्रकार काम करने से ही हो जायेगा।

इसका तात्पर्य यह हुआ कि सच्चाई व ईमानदारी से अपना कर्त्तव्य पालन करना ही धर्म है। इस धर्म से सिर्फ व्यक्ति ही नहीं समाज व राष्ट्र की उन्नति व समृद्धि होना भी निश्चित है।

आज मेरे देश में इस कर्त्तव्य धर्म की सवसे ज्यादा अवहेलना हो रही है, जिससे देश निरन्तर अवनति व पतन की ओर जा रहा है। इसलिए आज हमें इस धर्म की सवसे ज्यादा आवश्यकता है। यदि हर व्यक्ति, चाहे वह किसान हो, मजदूर हो, दुकानदार हो, कारखाने का मालिक हो, डॉक्टर हो, वकील हो, सरकारी मुलाजिम हो, सीमा पर लड़ने वाला सैनिक हो, चाहे देश को चलाने वाला प्रधानमंत्री हो, सच्चाई व ईमानदारी से अपनी जगह पर रहता हुआ अपने कर्त्तव्य धर्म का पालन करता है और देश के हित को सर्वोपरि समझता है तो देश को कभी भी आंच नहीं लग सकती और समाज व राष्ट्र, दिन प्रतिदिन उन्नति व समृद्धि की तरफ अग्रसर होता रहेगा। इसी में व्यक्ति की उन्नति होनी भी निहित है।

इस समय भारत में कर्त्तव्य परायणतावाले धर्म का बड़ा ह्रास हो रहा है। अधिकतर नागरिक अपनी जगह पर कर्त्तव्य परायणता नहीं कर रहे हैं। सव जगह कर्त्तव्य के स्थान पर पैसे को महत्व दिया जा रहा है। इसलिए कोई भी काम समय पर सुचारू रूप से नहीं हो पा रहा है। जिसके कारण देश की सारी व्यवस्था अव्यस्थित होती जा रही है। देश का चारित्रिक पतन होता जा रहा है। सरकारी कारखाने व व्यवस्था ठप्प होते जा रहे हैं जिससे देश पर विदेशी ऋण बढ़ता जा रहा है और देश की स्थिति अति नाजुक बनी हुई है। यह सरकार और प्रत्येक जागरूक नागरिक के लिए विचारणीय प्रश्न है।

अपने आर्यावर्त्त देश में प्राचीन ऋषि मुनियों ने देश में सुव्यवस्था बनाये रखने के लिएगुण, कर्म, स्वभाव के अनुसार चार श्रम विभाग (वर्ण) वनाये थे जिनको ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र कहा जाता है। महाभारत युद्ध में अधिकतर विद्वानों, योद्धाओं, नीतिज्ञों व धर्मवेत्ताओं के समाप्त होने से देश में वेदों का पढ़ना-पढ़ाना प्रायः बन्द सा हो गया, जिससे अज्ञान, अंधविश्वास व पाखण्ड का वोलबाला हो गया और वर्णों को गुण, कर्म स्वभाव को न मानकर जन्म के आधार पर माना जाने लगा और उनको वर्ण की जगह जाति की संज्ञा दे दी गई। आज यह चारों जातियाँ ही अपने-अपने कर्त्तव्य धर्म से च्युत है जो देश के पतन का मुख्य कारण वनी है।

यदि भारत को उन्नति व समृद्धशाली बनाना है तो प्रत्येक भारतीय को अपने-अपने कर्त्तव्य धर्म का पूरा सच्चाई और ईमानदारी के साथ पालन करना अति आवश्यक है और देश के दित को अपने तथा अपनी पार्टी के हित से ऊपर समझना बहुत जरूरी है। तभी भारत उन्नति करता हुआ पुनः 'विश्वगुरु' तथा 'सोने की चिड़िया' कहलानने के योग्य वन सकता है।

सत्यार्थ प्रकाश कवितामृत

काव्यरचना : आर्य महाकवि पं. जयगोपाल जी

ओ३म् सच्चिदानन्देश्वराय नमो नमः

सत्यार्थ प्रकाश भूमिका भाग (१)

दोहा :

सत्य अर्थ प्रकाश हित, या सत्यार्थ प्रकाश।
जगे जोति नित सत्य की, झूठ तिमिर का नाश॥

चौपाई

सदा सत्य को सत्य बखाने,
जरु मिथ्या को मिथ्या माने।
सत्य अर्थ को यही प्रकाशा,
होय जगत में सत्य विकाशा॥
सत्य स्थान पर झूठ प्रकाशे,
वह नर झूठा सत्य प्रणाशे।
जो जैसा जग माँहि पदारथ,
वाको वैसा लिखे यथारथ॥
शुद्ध सत्य यह बात कहावे,
सत्य पुरुषका चरित बनावे।
अधम पुरुष जो है पखपाती,
सत्य बात नहीं उसे सुहाती॥
निज असत्य को सत कर माने,
पर का साँचहु झूठ प्रमाने।
वे नहीं सत्य प्राप्त कर पाते,
वे दुःख सागर गोते खाते॥

दोहा

सद्ग्रंथन निर्माण कर, अथवा दे उपदेश।
सुजन आप्त देते रहे, सदा सत्य संदेश॥

चौपाई

सुन उपदेश झूठ जन त्यागे,
सुख स्वरूप सत्यहुं अनुरागे।
मानुष का आतम बहु ज्ञानी,
जान सके निज लाभ रु हानि॥
यह आतम बहु जाननहारा,
झूठ सांच कर सकता न्यारा।
तौ भी लख कर निज परयोजन,
धन संपति अरु वस्तर भोजन॥
झूठे मारग में झुक जाये,
करे दुराग्रह सुपथ न आये।
घोर अविद्या इस में कारण,
सत्य मार्ग से करे निवारण॥

సంక్షిప్త సత్యార్థ ప్రకాశము

(ద్వితీయ సముల్లాసము) శిక్షా విషయము

ముగ్గురు గురువు - మాతృమాన్, పితృమానాచార్యవాన్ పురుషోవేద ఇయ్యది శతపథ - బ్రాహ్మణ మందలి వచనము. వాస్తవముగా శిక్షకులు ముగ్గురు-ఉత్తమ తల్లి-తండ్రి-ఆచార్యుడు. అప్పుడే మనష్యుడు జ్ఞానవంతుడగును. తల్లిదండ్రులు ధర్మాత్ము లును. విద్వాంసులును నగువారి ఆ సంతానము మహా భాగ్యవంతము. తల్లి నుండి సంతాన మునకు ఉపదేశమును, ఉ పకారమును కలుగునంత మరొకని నుండి కలుగదు. తల్లి సంతానమును ప్రేమించునంత మరెవరును ప్రేమించరు. తల్లి సంతానమునకు హితమొనర్చ గోరునంత నన్యులెవరును గోరును. ఐదేండ్ల వరకు శిశువులకు దల్లియు, ఆరవ ఏడు మొదలుకొని ఎనిమిదేండ్ల వరకు తండ్రియు శిక్షనొసంగ వలెను. తొమ్మిదవ ఏట శిక్షను, విద్యాదానమును చేయు పూర్ణ విద్వాంసులును విదుషీమణులును గల ఆచార్య కులమునకు 'గురుకులమునకు' తమ తమ బాలకులను బాలికలను తల్లిదండ్రులు పంపుకొనందగును. చదువులో గారాబము చేయక తాడించు చుండు తల్లిదండ్రుల బాలబాలికలే విద్యాయుక్తులు, సభ్యులు, సుశిక్షితులు నగుదురు. తల్లిదండ్రులు తమ సంతానమును ఆచార్యులు తమ శిష్యులను తాడించు చుందురేని వారు తమ హస్తములతో అమృత పానము చేయించు చున్నారని యెరుగవలెను. కాని తల్లిదండ్రులును, అధ్యాపకులును ఈర్ష్యాద్వేషముల నుండి తాడించ గూడదు. బయటి నుండి భయమును, లోపలి నుండి దయాదృష్టియు నుంచదగును.

బాలకుల గూర్చి తల్లిదండ్రుల కర్తవ్యము

బాలకులు సభ్యులగుటకును, ఏ యంగముచే కుచేష్ట జేయకుండుటకు గాని తల్లులు ఉత్తమ శిక్ష నొసంగుచుండవలెను. బాలకులు కొంత మాట్లాడుటకును, తెలుసుకొనుటకును యోగ్యులను నపుడు మంచి భాషను పెద్దలు, పిన్నలు, తల్లిదండ్రుల వలె మాన్యులు, రాజు, విద్వాంసులు మున్నగు వారితో సంభాషించుట, వర్తించుట, సమీప మున గూర్చుండుట మొదలుగా గల విధము లను గూడ తల్లిదండ్రులు నేర్పించ వలెను. వారు అయోగ్యముగ వర్తించకుండుటకును, వారి కంతట ప్రతిష్ఠ కలుగుటకును గాను ప్రయత్నించు చుండవలెను. బాలురు జితేంద్రి యులు, విద్యావంతులు, సత్సంగమందు రుచిగల వారగుటకును, అట్లే సత్యభాషణము, శౌర్యము, ధైర్యము, ప్రసన్నవదనము మున్నగు గుణములను మార్చుటకునుగాను సదా యత్నించుచుండ దగును. అనంతరము మంచి శిక్ష, విద్యా, ధర్మము, ఈశ్వర విషయము, తల్లిదండ్రులు, ఆచార్యులు, విద్వాంసులు, అతిథులు, రాజు, కుటుంబమువారు, చెల్లెండ్రు, భృత్యులు మున్నగువారితో వర్తించదగు విధములును ఉ పదేశములును గల మంత్రము లను, శ్లోకములను, సూత్రములను, వచనములను గూడ బాలురకు కంఠస్థము చేయించవలెను.

వీర్య రక్షణము అన్యోపదేశము

వీర్య రక్షణమందానందమును, దాని నాశనమందు దుఃఖమును కలుగునని తల్లిదండ్రులు, ఆచార్యులు బాలురకు బోధించ వలెను. చూడుడు ! ఎవని శరీరమందు వీర్యము సురక్షితముగ నుండునో వాని ఆరోగ్యము, బుద్ధి, బలము, పరాక్రమము వర్ధిల్లును వాడధిక సుఖమును బొందును. కాన బ్రహ్మచారులు కామ సంబంధమగు కథలు, విషయీ జనుల సహవాసము, విషయముల ధ్యానము, స్త్రీల దర్శనము, ఏకాంత సేవనము, సంభాషణము స్పర్శము మున్నగు కర్మల నుండి దూరమై యుండుటే దాని రక్షణోపాయమని యెరుగ వలెను. ఇంక వారీ నియముల చాలించుచు ఉత్తమ విద్యా శిక్షల బొందదగును. ఎవని శరీరమందు వీర్యముండదో వాడు నపుంసకుడును, కులక్షణములు గలవాడు నగును. అట్లే వానికి ప్రమేహాది రోగములు సంభవించి దుర్బలుడును, తేజస్సులేని వాడును, బుద్ధిహీనుడు నగును, ఇంక నుత్సాహము, సాహసము, ధైర్యము, బలము, పరాక్రమము మున్నగు గుణముల నుండి రహితుడై నష్టమగును.

ఇంక నట్లే ఛలకపటములనుండి, కృతఘ్నత నుండి దూరమై యుండ వలెనని, క్రోధాది దోషము లను, కఠోర వచనములను త్యజించి మధురముగను, శాంతముగను మాట్లడ వలెనని, ఎక్కువగను తక్కువగను చెప్పగూడదని, పెద్దల నాచరించి సత్కరించ దగునని, వారి సుఖమునకు వెళ్ళి వారిని ఉన్నతాసనముపై గూర్చుండ బెట్టవలెనని, ముందుగ వారికి నమస్తే చేసి, వారి యెదుట నుత్తమాసనముపై గూర్చుండ రాదని, సభలో తనకు దగిన స్థానమందనగా నక్కడి నుండి మరొకడు లేవకుండునట్టి స్థానమందు గూర్చుండ వలెనని, విరోధ మెవరితో బూన గూడదని గుణముల గ్రహించుచు దోషముల త్యజించ వలెనని, తమ తల్లిదండ్రు లకును, ఆచార్యులకును తమ మన ధనముల తోను, ఉత్తమ పదార్థములతోను ప్రీతి పూర్వక ముగ సేవచేయ వలెనని, ఆకలి కంటె కొంచెము తక్కువే తినవలెనని, మద్యమాంసాదుల సేవించ గూడదను నిత్యాది విషయముల ఉత్తమోపదేశము తల్లిదండ్రులును, ఆచార్యు లును బాలురకు చేయవలెను.

ఇవ్విధ ముగనే విద్యకును ధర్మమునకును విరుద్ధమై భ్రాంతి జాలమున బడద్రోయునట్టి భూత ప్రేతాది విషయములను విశ్వసించ గూడదను ఉపదేశము కూడ తల్లిదండ్రులును, ఆచార్యులును బాలురకు చేయవలెను.

భూత ప్రేతములు

మృతక శరీరమునకు ప్రేతమని నేరు.

శరీరము భస్మమైనపుడు దానికి భూతమను నామము కలుగును. అనగా పలానా పేరుగల వాడుండెను ఇప్పుడు లేడని యర్థము. ఎందరో ఉత్పన్నులై యుండిరి ఇప్పుడు లేరు వారందరు. భూతస్థులుకాన వారికి భూతనామ మంకితమగును. ఇట్లు బ్రహ్మ మొదలుకొని నేటి వరకుగల విద్వాంసులందరి సిద్ధాంతము. కాని శంకా - కుసంగము - కు సంస్కారము గల వ్యక్తికి భయము. శంకారూప భూతప్రేతములు, శాకినీ, డాకిని మొదలుగాగల భ్రమజాలము దుఃఖదాయకమగుచున్నది గమనించుడు ! మృతినొందిన జీవుడు తానొనర్చిన పాపపుణ్యములకు వశీభూతుడై ఈశ్వరుని వ్యవస్థచే జన్మాంతరమును "సుఖదుఃఖముల ఫలము బొందుటకు'' ధరించును. పరమేశ్వరుని నాశరహితమైన యీ వ్యవస్థను ఎవరు నిరాకరించ గలుగుదురు ? అవివేకులు వైద్యశాస్త్రమునుగాని, పదార్థ విద్యను గాని చదువకయు, వినకయు, విచారించకయు జ్వరాది శారీరక రోగములకును, ఉన్మాదాది మానసిక రోగములకును భూతప్రేతాది నామము విడుచున్నారు.

జ్యోతిషశాస్త్రము జన్మపత్రము

ఏమి జ్యోతిఃశాస్త్రము అబద్ధమా ? జన్మపత్రము కూడ నిష్ఫలమా ? జ్యోతిషశాస్త్రమున జెప్పబడిన అంకగణితము బీజ గణితము, రేఖా గణితము మున్నగు విద్యలు సత్యములు కాని ఫలము కులుగును లీలలన్ని అబద్ధములు గమనింపుడు ! పృథివి జడము, సూర్యాది లోకములన్ని జడములు అవి తాపమును, ప్రకాశాదుల నిచ్చునే గాని నోపించి దుఃఖమును, శాంతించి సుఖము నిచ్చుట కవి చేతనములా ? ప్రపంచమున రాజును, ప్రజలును సుఖదుఃఖముల జడయుచున్నారన్న గ్రహముల ఫలముకాదు, అయ్యది వారుచేసిన పాపపుణ్యముల ఫలము ఇంక జన్మ పత్రమనునది జన్మపత్రము వ్రాయబడి గ్రహముల ఫలము విననంత వరకే కలిగియుండును. తల్లిదండ్రులు ధనవంతులై రేని ఎఱ్ఱని పచ్చని చిత్రవిచిత్ర రేఖల చేతను, దరిద్రులై రేని సామాన్యమైన రేఖల చేతను వ్రాసి పురోహితుడు వినిపించుటకు దెచ్చును. అప్పుడు బాలకుని తల్లిదండ్రులు పురోహితుని ఎదుట గూర్చుండి వీని జన్మపత్రము మంచిగనున్నదా ? అని అడుగుదురు. జ్యోతిష్యుడు - ఉన్నట్లు వినిపింతు నను. ఆలకింపుడు ! వీని జన్మకాల - గ్రహములు మిగత మంచిగను, మిత్రగ్రహములు కూడ మిగుల మంచిగనుయున్నవను నిత్యాదుల విని తల్లిదండ్రులు జ్యోతిష్యుని సంబోధించుచు మీరు మిగుల కొని యాడదగిన వారనిజెప్పుదురు. జ్యోష్యుడు "ఈ పొడిమాటల నుండి కార్యము నెరవేరదని" ఈ గ్రహములు మంచిగనే యున్నవి కాని ఈ క్రూర గ్రహముల ప్రభావముచే నెనిమిదవ ఏట వీనికి మృత్యుయోగము కలదు. అనజెప్ప తల్లిదండ్రులు ఆనందమును త్యజించి శోకసాగరమున మునిగి 'జ్యోతిషుని మహతాజా !' ఇప్పుడు మేము ఏమి ఉపాయము చేయవలెనో చెప్పుడని అడుగుదురు. జ్యోతిషుడు ఇంత దానము చేయుడు, నవగ్రహజపము చేయించుడు, నిత్యము బ్రాహ్మణులకు భోజనము చేయించుడు, వీనివలన నవగ్రహముల విఘ్నము దూరము కావచ్చునని అనుమానాస్పదముగా ప్రస్తావించును అనుమానాస్పదముగ జెప్పిన దెందులకన్న నొకవేళ మరణించెనేని మేము ఏమి చేయగలము, పరమేశ్వరుని మించిన వాడెవడు ? మేము చేయవలసిన ప్రయత్నము చేసితిమి. మీరు చేయించితిరి కాని వాని కర్మయే అట్లుండెనని జెప్పుటకును, జీవించెనేని చూచితివా ? మా మంత్రముల యొక్కయు, దేవతలయొక్కయు, బ్రాహ్మణుల యొక్కయు శక్తిచే మీ బాలకుడు రక్షింపబడెనని జెప్పుటకును గాను, అనుమానాస్పద శబ్దము ప్రయోగించునని యెరుగదగును.

ఇచ్చి చోట, వారి జపమువలన బాలకుడు మరణించినను, జీవించినను వారి నుండి ఇచ్చిన దాని కంటె రెండు మూడింతల ధనమును తీసుకొనవలెను. ఏలన మరణించిన పక్షమున పరమేశ్వరుని నియమము నెవడు నుల్లంఘించ జాలడు. అతని మించిన వాడెవడునూ లేడని జ్యోతిషుడు మొదట జెప్పి యున్నట్లు గృహస్థులు కూడ వాడు తన కర్మ ఫలము వల్లను, ఈశ్వర నియమము వల్లను జీవించినాడే కాని మీ జపాదులవలన కాదని జెప్పవలెను.

"అమ్మవరనే" శీతలాది మంత్ర తంత్రములు

ఈ స్ఫోటక శీతలాదులును, మంత్ర తంత్రములు నలువంటివే కొందరు మేము మంత్రముల జదివి దోరములను, యంత్రములను, తాయితులను కట్టుడుమేని వాని ప్రతాపము వలన పరమేశ్వరుడును, దేవతలును బాలునికే విఘ్నమును కలుగనివ్వక రోగమును దూరపరుతురని యందుడు. ఏమి మీరు మృత్యువు నుండి ఈశ్వరుని నియమము నుండియు, కర్మఫలమునుండియు తప్పించగలరా ? అని వారికిని అదే యుత్తర మియ్యవలెను. అట్లే మీరిట్లు చేయుటవలనను ఎందరో పిల్లలు చనిపోవుచున్నారు. మీ యింటను ఎందరో చచ్చుచున్నారు. ఏమి మీరును మృత్యువు నుండి తప్పించు కొనగల్గుదురా ? అని నడగవలెను. అప్పుడు వారేమియూ జెప్పజాలక, మాపప్పు ఇక్కడ ఉడకదని దెలిసికొందురు.

वेद मंत्र

ओ३म् स्वस्ति नः पथ्यासु
धन्वसु स्वस्त्यप्सु वृजने स्वर्वति।
स्वस्ति नः पुत्रकृथेषु योनिषु
स्वस्ति राये मरूतो दधातन।।
(ऋग्वेद १०/६३/१५)

अर्थ

हे जगदीश ! हमें ऐसे सन्मार्ग पर चलाओ कि आपकी कृपा से हम जल वाले स्थलों वा मरुस्थलों में, लाभदायक संग्रामो में, पुत्रों के कर्मों से युक्त घरों में भोज्य, धनादि की प्राति में सफलता - सुख प्राप्त करें।

దౌహృదిని
(ఋషుల దృష్టిలో గర్భిణీస్త్రీ)

-డా॥ కోదూరి సుబ్బారావు

ప్రాచీన భారతీయ ఋషులు గర్భిణీస్త్రీని దౌహృదినిగా పేర్కొనుట పెక్కు ఆయుర్వేద, ఆధ్యాత్మిక గ్రంథములందు కాననగును. దౌహృదిని యనగా రెండు హృదయములు గలది యని అర్థము. తనదైన ఒక హృదయముతో బాటు తన గర్భములో పెరుగు శిశువుయొక్క హృదయము కలిసి రెండు హృదయములగును. మూడవ మాసమునుండి శిశువుకు హృదయ మేర్పడి బిడ్డ రక్తనాళములు తల్లి రక్తనాళములతో బొడ్డు త్రాడు ద్వారా కలుపబడును. అప్పటినుండి గర్భిణి దౌహృదిని యగును. పిండము ద్వైహృద యగును. పరస్పర రక్త సంచారముతో బాటు మనస్సుతో మనసు అనుసంధానమై కోరికలలో, భావములలో అనుసంధాన మేర్పడును. ఈ విషయమునే ప్రఖ్యాత చరక సంహిత చక్కగా వివరించును.

"తృతీయే మాసి సర్వేంద్రియాణి సర్వాఙ్గావయవాశ్చ । యోగపద్యేనాభినిర్వర్తనే ॥

(చరకము, శరీర స్థానము 4-13)

"తస్య యత్కాలమేవేన్ద్రియాణి సంతిష్ఠన్తే తత్కాలమేవాస్య చేతసి వేదనా నిబన్ధం ప్రాప్నోతి, తస్మాత్తదా ప్రభృతి గర్భః స్పన్దతే ప్రార్థయతే చ, తద్ద్వైహృదయమాచక్షతే వృద్ధాః మాతృజం చాస్య హృదయం మాతృహృదయే నాభిసంబద్ధం భవతి రసవాహినీభిః సంవాహినీభిః తస్మాత్తయోస్తాభిర్భక్తిః సంపద్యతే తచ్చైన కారణమవేక్షమాణా నద్వైహృదయస్య విమానితం గర్భమిచ్ఛన్తి కర్తుం, విమాననే హ్యస్య దృశ్యతే వినాశో వికృతిర్వా సమానయగక్షేమా హి మాతా తదా గర్భేన కేషుచిదర్థేషు, తస్మాత్ప్రియహితాభ్యాం గర్భిణీం విశేషేణోపచరన్నిత కుశలాః"

(చరక. శరీర. 4-16)

మూడవ మాసమునందు సమస్త ఇంద్రియములును, సమస్త అంగప్రత్యంగ ములును ఒక్కమారుగా ఏర్పడును.

ఆ గర్భమునకు ఎప్పుడు ఇంద్రియములు ఏర్పడునో అప్పుడే మనసునందు సుఖదుఃఖానుబంధము కలుగును. అందువలన అప్పటి నుండి గర్భము కదలుచుండును. మఱియు ఆయా విషయములను కోరుచుండును. అందుచే దానిని ద్వైహృదయ మని చెప్పుచున్నారు. తల్లివలన జనించిన గర్భము యొక్క హృదయము తల్లియొక్క హృదయముతో రక్తనాళములచే సంధింపబడియుండును. నాడులు కలుపబడియుండును. అందువలన తల్లికి, గర్భమునకు వాడుల ద్వారా కోరికలు గలుగుచుండును. అందుచేతనే గర్భిణీ స్త్రీలయొక్క కోరికలను తిరస్కరించగూడదు. తిరస్కరించినచో గర్భమునకు వినాశముగాని వికృతిగాని కలుగును. కొన్ని విషయములందు గర్భిణి గర్భముతో (శిశువుతో) సమానమైన యోగక్షేమములు కలదిగా నుండును. కావున గర్భిణీ స్త్రీకి ఇష్టములైనట్టియు, హితములై నట్టియు ఉపచారములను తప్పక చేయవలెను.

సుశ్రుత సంహితయందు స్వల్పభేదముతో తృతీయ మాసమందు అఙ్గప్రత్యఙ్గ హృదయము లేర్పడినను అవి సూక్ష్మముగా నుండును గాన నాలుగవ నెల నుండి గర్భిణీస్త్రీని దౌహృదిని యని పిలువవలె నని చెప్పబడినది.

"తృతీయే హస్తపాదశిరసాం పఞ్చపిణ్డికా నిర్వర్తన్తే అఙ్గప్రత్యఙ్గ విభాగశ్చ సూక్ష్మో భవతి । చతుర్థే సర్వాఙ్గ ప్రత్యఙ్గ విభాగః ప్రవ్యక్తతరో భవతి । గర్భహృదయ ప్రవ్యక్తభావాచ్చేతనా ధాతురభివ్యక్తో భవతి । కస్మాత్ ? తత్స్థానత్వాత్ తస్మాత్ గర్భశ్చతుర్థే మాస్యభిప్రాయమిన్ద్రియార్థేమ కరోతి, ద్విహృదయాం చ నారీం దౌహృదినీమాచక్షతే ॥

(సుశ్రుత శరీర. 3-12)

ఈ కారణములచో ఈ గ్రంథమునకు 'దౌహృదినీ' యను నామమిడుట జరిగినది. అప్పటికిని ప్రాచీన ఆయుర్వేద వైద్యులు గర్భిణిని గూర్చిన శాస్త్రమును 'దౌహృదయ' అని వ్యవహరించుట గన్పడుచున్నది.

పుంసవన సంస్కారము

స్త్రీ గర్భములో బిడ్డ పెరుగుచున్నపుడు రెండు సంస్కారములు చేయవలసినదిగ గృహ్యసూత్రాలలో, ఆయుర్వేద గ్రంథాలలో విధానము గలదు. అందు మొదటిది పుంసవనము అనగా గర్భములో పెరుగు శిశువు ఆరోగ్యముగ, బల వీర్యములతో వృద్ధిజెందుటకు చేయు ప్రయత్నము. రెండవది సీమంతము (సీమంతోన్నయన సంస్కారము). ఇది గర్భములో పెరుగు శిశువు యొక్క మానసికోన్నతికై చేయబడు ప్రయత్నము.

నేడు లోకములో సీమంతము గురించి ఏ కొందరికైనా తెలియునేమోకాని, పుంసవన పదము క్రొత్తగా కనపడును. అట్టి తరి ఆ సంస్కారము ఎట్లో, దాని వలన ఏ ప్రయోజనము కలుగునో ఎవరికి తెలియును ? గాన ఆ పద నిర్వచనమును తెలిసికొందుము. "పుమాన్ సూయతే యస్మిన్ ఇది పుంసవనమ్" దేని వలన (ఏ సంస్కారము ద్వారా) పుమాన్ - బలము, శక్తిగల సంతానము నిర్మింపబడునో అదే పుంసవన సంస్కార మని ఋషుల నిర్వచనము. అంతేకాని కొద్ది మంది తలచునట్లు అది పుత్ర సంతానము కొరకు చేయబడు సంస్కారము కాదు. ఎందుచేత తన రెండవ లేదా మూడవ నెలలో జరుపబడు ఈ సంస్కారము వలన లింగ నిర్దేశము ఎట్లు సంభవము ?

పెక్కురు తల్లిదండ్రులు వారి బిడ్డల అనారోగ్యముపట్ల ఆందోళన జెందుచుందురు. తాము బలముగ, పుష్టిగా, ఆరోగ్యముగా నున్నను తమ బిడ్డలు బలహీనముగ, బక్కగా నుండి తరచు రోగముల పాలగుట వారికి చాలా బాధను కలిగించును. ఎన్ని జాగ్రత్తలు తీసుకున్నను బిడ్డలు ఈ విధముగా వ్యాధుల పాలగుటకు కారణమేమిటని వైద్యులను ప్రశ్నించుచుందురు. వైద్యులు ఏవో కొన్ని విటమిన్ల లోపమనియు, కాల్షియము మొదలగు లవణముల లోపమనియు చెప్పి కొన్ని టానిక్కులను వ్రాసి యిత్తురు. రోగనిరోధక

టీకాలను వేయించవలెననియు, పరిశుభ్రతను పాటించవలెననియు, సూక్ష్మక్రిములు ప్రవేశించకుండా జాగ్రత్తలు తీసుకొనవలెననియు చెప్పుదురు. కాని యిట్టి బలహీనతలకు కారణమేమియో నేటి వైద్యులును వివరించలేకున్నారు. ఇందుకు పోషకాహర లోపము కూడా కారణము కాదు. గర్భావస్థలోను, ప్రసవానంతరమును చక్కటి పోషకాహారము తీసుకొను విద్యావంతుల శిశువులు కూడా వ్యాధిగ్రస్తులగుచుండుట చూచుచున్నాము. దానికి వైద్యులు వాతావరణ కాలుష్యమనియు, ఎలర్జీ అనియు ఏవేవో లోపములనియు చెప్పుచున్నారే కాని సరియైన కారణములు వెదకుటకు ప్రయత్నించుట లేదు.

ప్రాచీన ఋషులు బిడ్డలు ధాతుశక్తి, రోగనిరోధకశక్తి కలిగి బలముగా నుండుటకు బిడ్డ గర్భములో నున్నప్పుడే విశేష ప్రయత్నము చేయవలెనని చెప్పుదురు.

గర్భిణీస్త్రీ యొక్క దృష్టిని ఆ జాగ్రత్తలవైపు కేంద్రీకరించుట కొఱకే యీ పుంసవన సంస్కారము నిర్దేశింపబడినది. అందు ప్రత్యేక హెూమముతోపాటు కొన్ని ఓషధుల సేవనము, నశ్యాదులు చేయించుట యుండును. తీసికొనవలసిన జాగ్రత్తలు కూడా ఉపదేశింపబడును. ఆయుర్వేద గ్రంథములలో ముఖ్యముగా చరక, సుశ్రుత సంహితలలో ఈ విషయములు చక్కగా వివరించబడినవి. వాటిని నేటి ఆధునిక ఔషధ విజ్ఞానముతో పోల్చి చూచుకొని బుద్ధితో నిర్ణయించుకొని ఆచరించుట మంచిది. అందుకు మార్గదర్శకముగా మేము ఈ గ్రంథమును వ్రాయ తల పెట్టితిమి.

గర్భిణీ స్త్రీ గర్భస్రావము కలుగకుండగను, తాను, తనలో పెరుగు బిడ్డ ఆరోగ్యముగా నుండుటకును కొన్ని జాగ్రత్తలు తీసికొనుట, కొన్ని విషయములు తెలుసుకొనుట చాలా అవసరము. అవి ఏవి యనగా :

1) గర్భము స్థిరమైనట్లు ఏ లక్షణముల వలన నిర్ణయించవచ్చును ?

2) గర్భములో శిశువు ఏవిధముగా పెరుగును ?

3) గర్భిణీ కాలమందు వచ్చు సాధారణ వ్యాధులు, తాత్కాలిక వ్యాధులు, వాటి చికిత్సలు.

4) గర్భస్రావము జరుగకుండా ఏఏ జాగ్రత్తలు తీసుకొనవలెను ?

5) గర్భములో పెరుగు శిశువు ఆరోగ్యముగా వృద్ధిజెందుటకు ఏయే ఔషధములు అవసరమగును ?

6) బిడ్డకు ధాతుశక్తి పెరుగుటకు ఏఏ ఆహారములు తీసుకొనవలసి యుండును ?

7) పుంసవన సంస్కారము ఎప్పుడు (ఎన్నవ నెలలో) చేసిన మంచిది ?

8) ఏ కారణము చేతనైన గర్భస్రావము కలుగు సూచనలు కనబడిన ఏ రకముగా వాటిని నివారించవచ్చును ?

గర్భము స్థిరమైనట్లు ఏ లక్షణముల వలన నిర్ణయింపవచ్చును ?

(అ) నెలసరి ఋతువు అగుపడకపోవుట సాధారణముగ గర్భధారణ యొక్క తొలి సూచన. కోని ఇది ఒక్కటే తొలి సూచనగా తలంచుటకు వీలు లేదు. కొన్ని వ్యాధులలో కూడ బహిష్టు నిలిచిపోవును. రక్తక్షీణత (Anaemia), క్షయ, మధుమూత్రము (Diabetis) థైరాయిడ్ గ్రంథివ్యాధులు, తీవ్ర జ్వరములు. పోషకాహార లోపము, స్థూలత్వము తగ్గించుటకు ఆహారము తగ్గించుట (Dieting), మానసికమైన ఒత్తిడులు, భయము, విచారము మొదలగునవి బహిష్టు కనపడకుండుటకు కారణము కావచ్చును.

(ఆ) గర్భధారణ జరిగినప్పటి నుండి గాని, లేదా ఒకనెల అనంతరము గాని వికారము, వాంతులు కలుగును. ఉదయము లేచిన వెంటనే వికారము కలిగి లాలాజల మధికముగ ఊరుచు వాంతు లగుచుండును. వీటినే వేవిళ్ళు (Morning Sickness) అందురు.

(ఇ) ఆహారపు రుచియందు, హితవునందు మార్పులు కలుగుచుండును. సాధారణముగ గర్భవతికి తొలి దినములలో ఆకలి లేకపోవుటయు, ఆహారమునందు అయిష్టతయు కలుగును. కొద్ది ఆహారము తిన్నను కడుపు నిండు బరువెక్కును. కొందరు పుల్లని వస్తువులను కోరుచుందురు. మరియు మట్టి, సుద్ద, బొగ్గు, బలపములు మొదలగు తినకూడని వస్తువులను కోరుచుందురు.

(ఈ) స్తనములందు, గర్భకోశమునందు, యోని రంగునందు మార్పులు కలుగుచుండును. సుశ్రుతము శరీర స్థానము (3-14, 15) లో గర్భిణీ లక్షణము ఈ విధముగ వర్ణిపబడినది.

"స్తనయోః కృష్ణముఖతా రోమ రాజ్యుద్గమ స్తథా।
అక్షి పక్ష్మాణి చాప్యస్యాస్సంమీల్యన్తే విశేషతః ॥
అ కామతశ్ఛర్దయతి గన్ధాదుద్విజతే శుభాత్ ।
ప్రసేకస్సదనం చాపి గర్భిణ్యా లిఙ్గముచ్యతే ॥

చనుమొనలు నలుపురంగుగా నుండుట, నూగారు రోమములు వ్యక్తముగా నుండుట, కనురెప్పలు ఒకదానితో నొకటి విశేషము కలియుచుండుట, కారణము లేకనే వాంతి యగుచుండుట, సువాసనల వలన భయపడుచుండుట (అనగా అవి కిట్టకుండుట), నోట లాలాజలము అధికమగుట, శరీరము సడలుట - ఇట్టి లక్షణములు గల స్త్రీ గర్భిణీ యనితెలియును.

(ఉ) గర్భధారణ తొలిదశ యందు కొందరకు నిద్ర అధికముగా నుండి ఉదయ మాలస్యముగా లేచుచుందురు. దినమంతయు ఆవులించుచు కునికిపాట్లు పడుచుందురు.

(ఊ) Preudocyesis లో అధిక సంతానేచ్ఛగల కొంతమంది స్త్రీలలో గర్భధారణ జరుగకుండనే పై లక్షణములన్నియు కలుగుచుండును. ఇట్టి పొరపాట్లు కలుగకుండుటకు కొన్ని పరీక్షలు చేయించుట ఎంతైనా అవసరము. ఈ పరీక్షలు ముఖ్యముగా స్త్రీ (లేడి) డాక్టరుచేత జరిపించుట అవసరము. గర్భకోశమును పరీక్షింపజేయుట, గర్భిణీ స్త్రీ మూత్రమును ప్రయోగశాలలో పరీక్ష చేయించుట అవసరము. గర్భవతి యొక్క గర్భకోశము అప్పుడప్పుడు సంకోచము చెంది కంతివలె అగుచుండును. ఇది గర్భకోశమును పరీక్షించునపుడు తెలియును. కంతి అయిన యెడల మధ్యమధ్య మెత్తపడక ఎప్పుడును గట్టిగనే యుండును. స్త్రీ గర్భవతియైన క్షణము నుండి ఆమె శరీరమునందు కొన్ని హార్మోనులు ఉత్పత్తి యగుచుండును. ఈ హార్మోనుల వలననే ఆమె శరీరమునందు, స్తవములందు గర్భకోశమునందు మార్పులు కలుగుచుండును. రెండవ వారమునుండి హార్మోనులు ఆమె మూత్రము ద్వారా విసర్జింపబడుచుండును. కనుక గర్భిణీస్త్రీ యొక్క ఉదయపు మూత్రమును పరీక్షకు పంపిన గర్భధారణ

ధ్రువపడును. ఇంతవరకు లభించిన ఆధునిక విజ్ఞానమును బట్టి రెండవనెలలో గర్భధారణ నిర్ణయించుటకు ముఖ్యమైన ఆధారము ప్రయోగశాలలో మూత్ర పరీక్షయే. కొన్ని కొన్ని అసహజ గర్భదారణలయందు ఈ పరీక్ష తప్పవచ్చును. అప్పుడు అయిదవనెల తదుపరి శిశువు ఎముకలు నిర్మాణమగును. కనుక, ఎక్స్‌రే పరీక్ష చేసిన గర్భధారణ ఋజువగును. కాని గర్భిణీ స్త్రీలను ఎక్స్‌రే కిరణములకు గురిచేయుట మంచిది కాదు. దానివలన పుట్టబోవు బిడ్డకు నయముకాని కొన్ని దీర్ఘ వ్యాధులు కాని అవయవ లోపములు కాని కలుగవచ్చునని కొందరి (వైద్యుల) అభిప్రాయము. ప్రస్తుతము అల్ట్రాసౌండ్ స్కేనింగ్ Ultra Sound Scanning క్షేమకర ముగా కనబడుచున్నది. దీనివలన గర్భస్థితి తెలుసుకొనవచ్చును.

గర్భములో శిశువు ఏవిధముగా పెరుగును ?

ఆధునిక వైద్యవిజ్ఞానము ననుసరించి ప్రతిస్త్రీ గర్భకోశమునకు ఇరువైపుల రెండు అండకోశములు (Ovaries) ఉండును. అందు అండములు పక్వమగుచు నెలకొక అండము విడుదల యగును. ఒకనెల కుడి అండకోశము నుండి విడుదలైన, రెండవనెల ఎడమ అండ కోశమునుండి విడుదల యగును. పక్వమైన అండము అండవాహిక (Fellopian Tube) లోనికి చేరి అండవాహిక గోడలను అతుకుకొని యుండును. గర్భాధాన సమయమున వీర్య కణములు స్త్రీ గర్భకోశము (Uterus) ద్వారా పయనించి అండవాహిక లోని అండమును చేరును. అందు ఒక వీర్య కణము మాత్రమే 'బొనపెల్లు సిడా' అనే కణాల పొరను చొచ్చుకొని అండముతో కలియును. అప్పుడు దానిని 'జైగోట్' అందురు. ఇది ఒక అంగుళములో 175వ వంతు (1/175) వ్యాస పరిమాణములో నుండును. ఇంత సూక్ష్మాతి సూక్ష్మమైన పిండములో శిశువు భవిష్యత్ అభివృద్ధిని నిర్దేశించే జన్యుకణాల క్రోమోజోములు ఉంటాయి. ఈ క్రోమోజోములు తల్లినుండి 23 తండ్రి నుండి 23 వచ్చి కలిసి జతలుగా ఏర్పడి క్రిక్కిరిసి ఉంటాయి. ఇవే తల్లిదండ్రు లిరువురి నుండి వంశపారంపర్య లక్షణాలను తీసుకువస్తాయి. ఆ జైగోట్ అండ నాళము ద్వారా గర్భకోశము వైపు పయనించు చుండును. గర్భకోశము చేరుటకు మూడు దినములు పట్టును. అంతవరకు అది అండవాహికలోని ద్రవమునుండియే ఆహారము తీసుకొనుచు రెట్టింపగుచుండును. అనగా ఆ జైగోట్ కణము రెండుగా విభక్తమై రెండు కణములగును. ఆ రెండు నాలుగుగా విభక్తమై నాలుగు కణములగును. ఆ నాలుగు ఎనిమిది యగును. ఈ విధముగా రెట్టింప గుచు గర్భకోశము చేరునప్పటికి (మూడు దినములలో) ఒక కణాలముద్దగా ఏర్పడును. అప్పుడు దానిని 'మారోలా' అందురు. ఆ ముద్దకు ఒక సంచియేర్పడి అందు ద్రవము కూడా యేర్పడును. అప్పుడు దానిని 'బ్లాస్టులా' అందురు. ఆ బ్లాస్టులా క్రమముగా పొడుగు పెరుగుచు దానికి ఒక బొడ్డు ప్రేగు తయారగును. ఆ ప్రేగు గర్భకోశమునకు కలుపబడి దాని ద్వారా పిండమునకు తల్లి నుండి ఆహారము అందుచుండును. ఆ పిండము తల్లిగర్భములోనే తను ఒక ప్రత్యేక ప్రాణిగ ఏ ఒత్తిడులకును లోనుగాక ప్రత్యేక ద్రవపు సంచిలో తేలుచు బొడ్డు త్రాడునుండి ఆహారమును స్వీకరించుచు పెరుగు చుండును. ఈ విధముగా గర్భకోశములో స్థిరపడుటకు ఏడు దినములు పట్టును.

15వ దినము నాటికి ఒక అంగుళము పొడవు గల పిండముగా తయారగును. ఆ పిండము నుండి కొన్ని బుడిపెలుగా బయలుదేరి ఎదుగుచు తల, కాళ్ళు చేతులుగా తయారగుచుండును. ఇరువదైదవ నాటికి తల్లి శరీరములో మార్పులు కనబడుచుండును. తల్లికి తాను గర్భము ధరించితి నను భావము కలుగచుండును. రెండవ నెల బహిష్టు కాక పోవడముతో ఆ అభిప్రాయము స్థిరమగును. అప్పుడు బహిష్టు అగుటకు మాత్రలు వాడుట మంచిదికాదు. ఆ మాత్రలు గర్భస్థాపన జరిగి ఉన్నట్లయితే బహిష్టును కలిగించకపోగా కొన్ని సందర్భములలో శిశువు అంగవైకల్య మునకు కారణము కావచ్చును. లేదా గర్భస్రావము కూడా కలుగవచ్చును. గర్భము అక్కరలేదనుకునేవారు అనుభవ వైద్యుల పర్యవేక్షణలో వారి సలహాలను అనుసరిం చుట మంచిది. కాని మాత్రలు వాడుట మంచిదికాదు. ముందు గర్భధారణ జరిగినదో లేదో తెలుసుకొనుటకు మూత్రపరీక్ష చేయించ వలెను. మూత్రములో హార్మోనులు కనపడిన పాజిటివ్ అనగా గర్భము ఉన్నట్లు గ్రహించ వలెను.

గర్భిణీకి నలభై అయిదవ దినము నుండి సాధారణముగా వాంతులు, వికారము కలుగుచుండును. నోటిలో లాలాజలము అధికముగా ఊరుచుండును. ఆకలి లేకపోవుట, అన్న హితువు లేకపోవుట వంటి లక్షణాలు ఉండును. వీటినే వేవిళ్ళు (Morning Sickness) అంటారు. దీని కోసం కంగారుపడ నక్కరలేదు. గర్భవతిలో హార్మోన్లు ఎక్కువ అగుటవల్ల ఇట్టి యిబ్బంది కలుగు తుందని ఆధునిక వైద్యుల అభిప్రాయము. దేహ ప్రకృతి కడుపులో పెరుగుచున్న పిండమును ఏదో అన్య పదార్థముగా భావించి వాంతి చేయాలని ప్రయత్నిస్తుంది. కాని ఆ పిండము జీర్ణకోశములో గాక గర్భకోశములో నుండుటచే వాంతి చేయలేక పోవుచుండును. క్రమముగా ఆ పరిస్థితికి దేహ ప్రకృతి అలవాటుపడి వేవిళ్ళు సర్దుకొనుచు అని డార్విన్ సిద్ధాంత అనుయాయుల కథనము. కొందరికి వేవిళ్ళు చాలా ఎక్కువ బాధ పెట్టవచ్చును. అప్పుడు వాంతులు తగ్గుటకు అల్లోపతి (Allopathy) మందులు వాడుట మంచిది కాదు. అవి వేవిళ్లను తగ్గించలేవు. ఆ మాత్రలవలన కొందరికి గర్భస్రావము కూడా గలుగవచ్చును. ఆ సమయములో కొన్ని ఆయుర్వేద చిట్కాలద్వారా, తగిన హోమియో మందుల ద్వారా వాంతులను, వికారమును చాలావరకు తగ్గించవచ్చును. అవి గర్భము (శిశువు)నకు ఎట్టి హానియును చేయవు. ముఖ్యముగా ఆహారములో తగిన శ్రద్ధ తీసుకొనవలెను. వేపుడు పదార్థములు, నూనెతో చేసిన తినుబండారములు తీసుకొన రాదు. తేలికగా జీర్ణమగు శాకాహారము, పండ్ల రసములు చాలా మేలు చేయును.

మూడు నెలలు పూర్తియగు నప్పటికి గర్భిణికి ఈ వేవిళ్లు ఉపశమించి బాగా ఆకలివేయును. ఆమె ఆహారము తిని జీర్ణము చేసుకోగలుగును. గర్భములోని పిండమునకు అవయవములు ఏర్పడును. వ్రేళ్ళు, కళ్ళు, ముక్కు, చెవులు, నోరు మొదలైనవన్ని

ఏర్పడును. ద్రవములో నుండుటచే కళ్ళు తెరవ లేక పోవును. కాని చెవులు వినబడు చుండును. కాళ్ళు చేతులు ఏర్పడుటచే తన చుట్టు ఉన్న ద్రవములో ఈదులాడుచుండును. గర్భస్థ శిశువు అప్పటికి నాలుగంగుళముల పొడవు, 15 గ్రాముల బరువు కలిగినదిగా అగును.

ఆయుర్వేద గ్రంథాలలో శరీర స్థానము అను పేరుతో గర్భవికాసము అత్యంత విపులముగా వర్ణించబడినది. ఆధునిక వైద్య విజ్ఞానముతో దానిని సరిపోల్చుట కష్టమే. ఐనను ఋషుల విస్తృత జ్ఞానమునకు అది ఒక ఉదాహరణగానున్నది. ఉపనిషదాది గ్రంథములలో కూడ గర్భములో శిశు వికాసము వర్ణిపబడినది. నేటి శాస్త్రజ్ఞులవలె ఋషులు తెలిసిన విషయముల నుండి తెలియని విషయములను పరిశోధించిరి. మూల ప్రకృతి నుండి అనేక మార్పులు జెంది స్థూల పంచ భూతములు (భూమి, జలము, అగ్ని, వాయువు, ఆకాశము) ఉత్పన్నములైన క్రమమునే గాక పిండోత్పత్తి క్రమమును కూడా శోధించిరి. అది నేటి ఆధునిక విజ్ఞానము చెప్పు పిండోత్పత్తి క్రమమునకు సరిపోవుచున్నది. ముఖ్యముగా ఐతరేయ ఉపనిషత్తు నందు ప్రథమాధ్యాయములోని ప్రథమ ఖండమునకు డా॥ పి.వి. వార్తక్, ఎం.బి.బి.యస్. (521, శనివారపు పేట, పూనే. 30) వైదిక్‌లైట్ అను ఆంగ్ల పత్రికలో చక్కటి వ్యాఖ్య వ్రాసినారు. గ్రంథ విస్తరణ భీతిచే అందలి సృష్టి రచనా క్రమమును వదలిపెట్టి పిండోత్పత్తి క్రమమును మాత్రము ఇచ్చట సంక్షిప్తముగా తెలుపుటకు ప్రయత్నిం చెదను అది ఏమన :

స ఈక్షతే మే ను లోకా లోకపాలాన్ను సృజా ఇతి।

సోఽద్భ్య ఏవ పురుషం సముద్ధృత్యా మూర్ఛయత్ ॥ (ఐతరేయ ఉప. 1-3)

పరమేశ్వరుడు అంభస్సు, మరీచి, మరము (మర్త్యము) ఆపస్సు అనెడు 4 లోకములను సృజించిన పిదప లోకపాల కులను సృష్టింపదలచి జలము నుండి పురుషుని అనగా శరీరమును ఉద్భవింప జేసెను.

పురుష శబ్దము సామాన్యముగా పరమేశ్వరునకు వర్తించును. జీవునకు, శరీరమునకు కూడా ఈ పదము వాడబడిన సందర్భములు కలవు. కాని ఇచ్చట సృష్టికర్త పరమేశ్వరుడగుటచే నీ పురుష పదము సృష్టింపబడిన విరాట్ పురుషునకు వాచక ముగా వ్యాఖ్యానకారులు గ్రహించియున్నారు. లోకములను సృజించిన పిదప పరమేశ్వరుడు జలము నుండి పురుషునుద్భవింప జేయు టను బట్టి సూక్ష్మతత్త్వములతో స్థూల సృష్టి నారంభించినట్లు భావింపవలయును. స్థూల సృష్టి యంతయు నిట విరాట్ పురుష పదముచే చెప్పబడినది. విరాట్ అనగా వివిధరూపములతో రాజిల్లునది యని అర్థము. పురుష పదము ప్రాణుల శరీరమున కును వాడవచ్చును. 'అన్నాద్ రేతః, రేతసః పురుషః' ॥ అన్నమువలన రేతస్సు, రేతస్సు వలన పురుషుడు అను నీప్రయోగ మున పురుషపదమునకు శరీరమనియే అర్థము.

విద్వాంసులు పురుష పదమును 'పురే' శయతి ఇతి పురుషః' శరీరమనెడి పురములో శయనించువాడు, నివసించువాడు అని నిర్వచించిరి. కాని డా॥ వార్తక్ గారు ఈ పదమును 'పురం ఉషః ఇతి పురుషః'- పురుషుడనగా శరీరమును ఉషతి- జీవోష్ణముచే జీవింప జేయువాడు అని నిర్వచించిరి. పురుష పదములోని 'ష' నుండి 'శయతి' అను భావము తీసుకొనుట కన్న 'ఉషతి' అను భావము తీసుకొనుట సమంజస మని వారి వాదన. యథార్థముగ శరీరములో జీవుడు లేనిది ఆహారసారము శక్తిగా మారి ఉష్ణము వెలువడదు. ఆక్సిడేషన్ జరుగదు. కనుక ఈ అర్థమును గురించి ఆలోచించ వలసియున్నది.

తమభ్యతపత్ తస్యాభితప్తస్య ముఖం నిరభిద్యత యథాండమ్ ముఖాద్ వాక్, వాచోఽగ్నిర్, నాసికే నిరభిద్యేతామ్, నాసికాభ్యాం ప్రాణః ప్రాణాద్ వాయు రక్షిణీ నిరభిద్యేతామ్–అక్షీభ్యాం చక్షుశ్చక్షుష ఆదిత్యః, కర్ణౌ నిరభిద్యేతామ్ - కర్ణాభ్యాం శ్రోత్రం శ్రోత్రాద్ దిశ, త్వఙ్ నిరభిద్యత త్వచో లోమాని, లోమభ్య ఓషధివనస్పతయో, హృదయం నిరభిద్యత - హృదయాన్మనో మనసశ్చంద్రమా, నాభిర్ నిరభిద్యత. నాభ్యా అపానోఽపానాన్ మృత్యుః శిశ్నం నిరభిద్యత - శిస్నాద్ రేతో, రేతస ఆపః ॥

(ఐతరేయ ఉప. 1-4)

ఆ పరమేశ్వరుడు ఆ విరాట్ పురుషుని తపింపజేసెను. తప్తము చేయబడిన ఆ పురుషుని ముఖము గ్రుడ్డువలె పగిలెను. అదే నోరు అయ్యెను. దానినుండి వాక్ శక్తి, ఆ వాక్ శక్తినుండి అగ్ని పుట్టినది. తదుపరి నాసికా రంధ్రములు తెరువబడెను. ఆ రంధ్రముల నుండి ప్రాణము జనించినది. ఆ ప్రాణము నుండి స్థూల వాయువు కలిగినది. ఆ పిమ్మట కన్నులు, దాని నుండి నేత్రేంద్రియము ఏర్పడినది. చక్షువు నుండి ఆదిత్యుడుద్భవించెను. తదుపరి కర్ణ రంధ్రము లేర్పడెను. వాటినుండి శ్రవణేంద్రియము - శబ్ద గ్రహణశక్తి జనించెను. చెవులనుండి దిక్కులు జనించెను. తదుపరి చర్మ మేర్పడి దానినుండి రోమములు, రోమముల నుండి ఓషధులు, వనస్పతులు ఉద్భవించెను. తదుపరి హృదయమేర్పడెను. ఆ హృదయము నుండి మనస్సు, మనస్సునుండి చంద్రుడు ఉద్భవించెను. తదుపరి నాభి యేర్పడెను. నాభి నుండి అపానము కలిగెను. అపానము నుండి మృత్యువు జనించెను. తదుపరి జననేంద్రియ మేర్పడెను. దానినుండి రేతస్సు ఆ రేతస్సు నుండి జలము ఉద్భవించినది. ఈ రకముగ ఆపస్సునుండి ఆపస్సు, జలము నుండి జలమను చక్ర భ్రమణము పూర్తి అయ్యెను. ఆ రేతస్సు నుండి ఉద్భవించిన జలముతో మరొక ప్రాణి ఉద్భవించును.

ఇచట ప్రకరణమును బట్టి విరాట్ పురుషుని ఆవిర్భావ క్రమమే అయినను ఇది నేటి వైజ్ఞానికులు తెలిపిన పిండ వృద్ధి క్రమమునకు చాలా దగ్గరగా నున్నది. "యథా పిండే తథా బ్రహ్మాండే" అను సామెత యథార్థము కావచ్చును. ఈ విషయమునే డా॥ వార్తిక్ గారు నేటి వైజ్ఞానికులు తెలిపిన పిండ వృద్ధి క్రమముతో పోల్చుచు చక్కగా వ్యాఖ్యానించినారు. ఆ క్రమము వారి మాటలలోనే చదువుడు.

...మిగిలాది తరువాయి సంచికలో

జ్ఞానం అన్ని పదార్థాల కంటె మిన్న

-చలవాది సోమయ్య

ఈ మంత్రంలో ముఖ్యంగా జ్ఞానాన్ని వ్వమని భగవంతుని ప్రార్థించడం జరుగుతుంది. మనం భగవంతుని ప్రార్థించదగిన వస్తువులన్నింటి కంటె జ్ఞానం అత్యంత ప్రధానమైంది. జ్ఞానం బాగుగా లభించిన వ్యక్తి తనకు కావలసిన పదార్థాలను తాను స్వయంగా సంపాదించగలుగుతాడు. జ్ఞానం మూడు విధాలుగా మనకు లభిస్తుంది. సద్గురువులు, సద్గ్రంథాలు, సంపూర్ణ జ్ఞాన స్వరూపుడైన భగవంతుని ద్వారా అది లభిస్తుంది. ఒక్కోమారు గ్రంథాలు, గురువులు కూడ మన సందేహాలను తీర్చలేకపోవచ్చు కాని భగవంతుని ఉపాసించే వ్యక్తికి కొన్ని జటిల విషయాలు మెరపు (Flash) మెరసినట్లు తటాలున బోధపడతాయి. గాయత్రీ మంత్ర ఉపాసకులలో ఈ జ్ఞానం క్రమ క్రమంగా వృద్ధి చెంది వారు గొప్ప జ్ఞాన సంపద కలవారవుతారు. దీన్ని ఋజువుచేసే ఇద్దరి జీవితాల నిక్కడ ఉట్టంకిస్తాను.

స్వామి విరజానంద సరస్వతి

స్వామి విరజానందులు ఆర్య సమాజ సంస్థాపకుడైన మహర్షి దయానందుల గురువు. ఆయన పంజాబు ప్రాంతమువాడు. అయిదేళ్ళ వయస్సులో మశూచిగ్రస్తుడై అంధుడైనాడు. పండ్రెండేడ్ల వయస్సులో తల్లిదండ్రుల నిరువురిని కోల్పోయాడు. అతడు అత్తమామల అధీనంలో ఉండవలసి వచ్చింది. వారు పెడుతున్న బాధలు భరించలేక తన 15వ ఏట ఇల్లు విడిచి మొదట హరిద్వారానికి, తరువాత ఋషీకేశానికి వెళ్ళాడు. హిమాలయ కీకారణ్యాల్లో మూడు సంవత్సరాలు తిరిగాడు. పండ్లు దుంపలు తిని జీవిస్తూ నిరంతరంగాయత్రీ మంత్రాన్ని ధ్యానించుతూ గడిపాడు. ఒక రోజాయనకు ఆశ్చర్యం గొలుపుతూ ఒక వాణి వినపడింది. "నీకు లభించ వలసిందేదో లభించింది. ఇక్కడి నుండి యిప్పుడే వెళ్ళిపో" అని. అది భగవద్వాణిగా ఎంచి ఆయన అక్కడి నుండి హరిద్వార్ దగ్గర గల పండితుడు సన్యాసి అయిన స్వామి పూర్ణాశ్రముని కలిసికున్నాడు. ఆయన వద్ద సన్యాసదీక్ష తీసికొని కౌముది, సూత్రమాల మొ॥ వ్యాకరణ గ్రంథాలు చదివాడు. అనంతరం కాశికి వెళ్ళి అక్కడ కొన్నేండ్లు ఆయా ఆశ్రమాల్లో వ్యాకరణం బాగుగా చదివి ఆనాటి వ్యాకరణ పండితుల్లో గొప్పవాడనిపించుకున్నాడు. నేత్ర దృష్టి లేకున్నను వినికిడి వల్లనే పెక్కు వ్యాకరణాది శాస్త్రాలను ధారణ చేయగలిగాడు. పండితులతో శాస్త్రార్థాలను చేసి వారిని జయించుతుండేవాడు. మధురలో స్వయంగా వ్యాకరణ పాఠశాలను నడుపుతూ దయానందుడంతటి వానికి గురువైనాడు. మూడు సంవత్సరాలు దయానందునికి పాఠాలు చెప్పి వేదాలను వేద ధర్మాలను ఆర్ష సంస్కృతిని దయానందుని ద్వారా ఉద్ధరించడానికి కారకుడైనాడు. ఆయనకింతటి శక్తిసామర్థ్యాలు నిరంతర గాయత్రీ మంత్రస్మరణ వల్ల చేకూరాయని మనకర్థమౌతుంది.

మహాత్మా ఆనందస్వామి

ఆనంద స్వామి జలాల్‌పూర్‌లో జన్మించాడు. ఇప్పుడది పాకిస్తాన్‌లో ఉంది. ఆనందస్వామి చిన్నతనంలో చాలా మొద్దు పిల్లవాడు. ఆరు లేక ఏడు తరగతులు చదివే సమయం వరకు అతడు అలా అన్నాడు. పాఠాలు ఎంత చదివినా అతనికి గుర్తుండేవి కావు. పాఠశాలలో ఉపాధ్యాయులు ఇంటి దగ్గర తండ్రి ఆయనకు పాఠాలు రావడం లేదని కొట్టేవారు. ఈ బాధలు భరించలేక ఆత్మహత్య చేసికోవాలని ఒక బ్రిడ్జి ఎక్కి కాలువలో దూకుతాడు. కొంతదూరం ప్రవాహంలో కొట్టుకు పోయిన తరువాత ఆ బులుణ్ణి ఒడ్డున వస్తున్న గ్రామస్థులు చూచి అతనిని రక్షించి తల్లిదండ్రులకు అప్పగించారు. కొన్నాళ్ళ తరువాత స్వామి నిత్యానందులను సన్యాసి ప్రచారార్థం జలాల్‌పూర్ వచ్చి ఈ పిల్లవాని తల్లిదండ్రుల తోటలోనే దిగాడు. తల్లిదండ్రులు ఈ పిల్లవాణి ఆయనకు ఆహారం మొ॥ తెచ్చి యివ్వడానికి స్వామి దగ్గర ఉండమన్నారు. ఈ పిల్లవాడు విచారగ్రస్తుడై ఉండడం చూచి స్వామి ఏమిటి నాయనా అలా ఉన్నావు అని అడిగాడు. నేను ఎంత చదివినా పాఠాలు గుర్తుండడంలేదండి. పాఠాలు రాలేదని బడిలో గురువులు కొడుతున్నారు ఇంటి దగ్గర తండ్రి పశువులు కాయమంటున్నాడు అని వెక్కివెక్కి ఏడుస్తూ చెప్పాడు. చనిపోవాలని కాలువలో దూకాను ఎవరో రక్షించారని చెప్పాడు. అప్పుడు స్వామి నిత్యానందులు దయతో నాయనా నీ వ్యాధికి తగిన మందు నేను చెబుతాను నీవు ధైర్యంగా ఉండు అనిచెప్పి గాయత్రీ మంత్రాన్ని అర్థసహితంగా ఉపదేశించి దీనిని అందరూ నిద్రపోయేటప్పుడు తెల్లవారుజామున రెండు మూడుగంటలకు లేచి స్నానంచేసి ధ్యానం చెయ్యమని చెప్పాడు. అప్పటి నుండి ఈ పిల్లవాడు అలారం గడియారం కొని రాత్రిళ్లు సమయానికి నిద్రలేచి గాయిత్రిని ధ్యానం చెయ్యడం మొదలుపెట్టాడు. ధ్యానం చేస్తుంటే నిద్ర వచ్చేదట. ముఖం మీద నీళ్ళు చల్లుకొని మరల ధ్యానానికి కూర్చునే వాడట. మళ్ళీ నిద్రవచ్చేదట. ఇక లాభం లేదని తను కూర్చునేచోట పైకప్పుకొక త్రాడుకట్టి క్రింది కొనకు తన పిలకను కట్టి ధ్యానం చేయడానికి కూర్చునేవాడట ! నిద్రవచ్చినప్పుడు తల వాలితే పిలకకు కట్టిన త్రాడు లాగడంవల్ల మళ్ళీ మెలకువ వచ్చి గాయత్రిని జపించుతూ కూర్చునేవాడట. ఇలా శ్రద్ధగా 5 లేక 6 మాసాలు గాయత్రిని జపించాడట. తరువాత అతని బుద్ధిలో మార్పురావడం గమనించాడట. తరువాత అతడు చదివే పాఠాలు బాగా గుర్తుండడం పరీక్షల్లో ప్రశ్న పత్రాలకు సరిగా జవాబులు వ్రాయగలగడం జరిగిందట. ఉపాధ్యాయులు ప్రశ్న పత్రాలకు అతడు వ్రాసిన జవాబులు చూచి నీవు ఎవరివద్ద నయినా కాపీకొట్టావా అన్నారట. లేదండి నేనిపుడు గాయత్రిని జపించుతున్నాను నాలో ఈ మార్పు వచ్చిందని చెప్పాడట. ఆ రోజుల్లో అతడు ఒక కవిత్వం కూడ వ్రాసి పంతులు గారికి చూపించితే పంతులు గారు సంతోషించి ఒక రూపాయి బహుమానం కూడ యిచ్చాడట. తరువాత కొన్నాళ్ళకు ఆర్య సమాజ ప్రచారకుడు మహాత్మా హంసరాజ్‌గారు జలాల్‌పూర్ ఆర్య సమాజ వార్షికోత్సవాల్లో

ఉపన్యసించడానికి వచ్చాడట. ఆయన చేసిన ఉపన్యాసం విని ఈ పిల్లవాడు కొన్ని పాయింట్లు నోట్ చేసికొని, రాత్రిలేచి హంస రాజు గారు చెప్పిన ఉపన్యాసమంతా యథాతథంగా వ్రాసి తెల్లవారిన తరువాత ఆయనకు చూపించాడట. అది చదివి హంస రాజుగారు నీవు తప్పులు లేకుండా నా ఉపన్యాసం యింత బాగా వ్రాశావు నీకు 'షార్ట్ హేండ్' తెలుసునా అని అడిగాడట. తెలియదండీ షార్ట్‌హేండ్ అంటే ఏమిటి అన్నాడట. ఈ పిల్లవాడు ! తరువాత హంస రాజు గారు ఈ పిల్లవాని తల్లిదండ్రులను పిలిచి ఈ పిల్లవాణ్ణి నాకిస్తే ఇతనికితగిన పనిలో నియోగిస్తాను అన్నాడట. వారు అందుకు అంగీకరించారట. తరువాత హంస రాజ్‌గారు ఆ పిల్లవాణ్ణి (ఆనంద స్వామిని) 'ఆర్య గజిట్' అనే పత్రికలో పనిచేయడానికి 30 రూ॥లు నెలజీతం యిస్తూ ఉంచాడట. క్రమంగా ఆ పత్రికకు ఆనందస్వామి సంపాదకుడైనాడు. మిలాప్ అనే ఉర్దూ దినపత్రికను కూడా స్వయంగా నడిపాడు. వివాహం చేసికొని సంతానం కని వారిని యోగ్యులుగ జేసి తరువాత 65 ఏండ్ల వయస్సులో సన్యాసి అయి ఆనందస్వామిగా వైదిక ధర్మప్రచారం చేశాడు. చూడండి చిన్నప్పుడు కటికి మొద్దుగా ఉన్న పిల్లవాడు గాయత్రీ మంత్రాన్ని ఉపాసించి అద్భుతమైన ధారణశక్తి కలిగి అంతటి గొప్పవాడైనాడు. మహాత్మా ఆనంద స్వామిగా మన్ననలందు కున్నాడు ఆర్య జగత్తులో-ఆయనంటాడు 'నేను నా ఎనిమిది తొమ్మిదేళ్ళ వయస్సు నుండి యిప్పటివరకు 70 ఏండ్లవరకు అంటే 62 సంవత్సరాల నుండి ఒక్క రోజుకూడ గాయత్రీ మాత ఒడిలో కూర్చొని అమృత పానం చేయని రోజులేదు' అని. గాయత్రీ మంత్ర పఠనం ఆయనలో అంత మార్పు తెచ్చిందన్నమాట.

మహాభారతంలో గాయత్రి మహిమను గూర్చి భీష్ముడన్న మాటలు

గాయత్రీ మంత్ర మహాత్మ్యాన్ని గురించి మహాభారత అనుశాసన పర్వం 150వ అధ్యాయంలో భీష్ముడు ధర్మరాజుకు చెబుతాడు. ధర్మరాజు భీష్ముని యిలా అడుగుతాడు.

పితామహా మహాప్రాజ్ఞ సర్వశాస్త్ర విశారద ।
కిం జప్యం జపతో నిత్యం భవేద్ ధర్మఫలం మహత్ ॥

ప్రస్థానే వా ప్రవేశేవా ప్రవృత్తే వాపి కర్మణి ।
దైవేవా శ్రాద్ధకాలే వా కిం జప్యం కర్మసాధనమ్ ॥
శాన్తికం పౌష్టికం రక్షా శత్రుఘ్నం భయ నాశనమ్ ।
జప్యం యద్ బ్రహ్మసమితం తద్ భవాన్ వక్తుమర్హతి॥

-మహాభా. అనుశా. 150-1,2,3.

హే పితామహ ! హే మహా విద్వాన్ ! ఏ మంత్రం సదా జపించడంవల్ల ఎక్కువ ప్రయోజనం కలుగుతుంది ? ఇటుఅటు తిరుగుతూ, లేస్తూ, కూర్చుంటూ, ఎక్కడికైనా వెళ్ళేటప్పుడుగాని, ఎక్కడి నుండైనా వచ్చేటప్పుడుగాని, ఏకార్యాన్నయినా ప్రారంభించే సమయంలోగాని, లేక ఏకార్యాన్నయినా ముగించే సమయంలో కాని, ఏదైన విశేష సమయంలోగాని స్మరించదగిన మంత్రమేది ? దేనిని జపించడంవల్ల ఆనందం శాంతి, సుఖం, రక్షణ కలుగుతుంది ? ధన సంపదలు, రాజ్యము దొరుకుతాయి ? దేనిని జపించడంవల్ల భయం నశిస్తుంది ? ఏది వేదానుకూలమైన మంత్రం ? అన్ని ప్రశ్నించాడు, భీష్ముడిలా సమాధానం చెప్పాడు.

యాన పాత్రే చ యానే చ ప్రవాసే రాజవేశ్మని ।
పరాం సిద్ధి మవాప్నోతి సావిత్రీం హ్యుత్తమా పఠన్ ॥
న చ రాజ భయం తేషాం న పిశాచాన్న రాక్షసాత్ ।
నా గ్న్యంబు పవన వ్యాలాద్ భయం తస్యోప జాయతే ॥
చతుర్ణామపి వర్ణానా మాశ్రమస్య విశేషతః ।
కరోతి సతతం శాన్తిం సావిత్రీ ముత్తమాం పఠన్ ॥
నాగ్నిర్దహతి కాష్ఠాని సావిత్రీ యత్ర పఠ్యతే ।
న తత్ర బాలో మ్రియతే న చ తిష్ఠన్తి పన్నగాః ॥
న తేషాం విద్యతే దుఃఖం గచ్ఛంతి పరమాంగతిమ్ ।
యె శృణ్వంతి మహద్ బ్రహ్మసావిత్రీ గుణ కీర్తనమ్ ॥
గవాం మధ్యే తు పఠతో గావోఽస్య బహు వత్సలాః।
ప్రస్థానే వా ప్రవాసే వా సర్వా పస్థాం గతః పఠేత్ ॥
జపతాం జుహ్వతాం చైవ నిత్యం చ ప్రయతాత్మనామ్।
ఋషీణాం పరమం జప్యం గుహ్యమే తన్నరాధిప।
సోమా దిత్యాన్వయాః సర్వేరాఘవాః కురవస్తథా ।
పఠన్తిత శుచయో నిత్యం సావిత్రీం ప్రాణినాం గతిమ్ ॥
అభ్యాసే నిత్యం దేవానాం సప్తర్షీణాం ధ్రువస్య చ ।
మోక్షణం సర్వ కృచ్ఛ్రాణాం మోచయత్య శుభాత్ సదా ॥

-అనుశాసన ప. 150-68 నుండి 74,77,78.

"యుధిష్ఠిర ! ఎవడు గాయత్రీ జపం చేస్తాడో అతనికి ఏనుగులు, గుఱ్ఱాలు, రథాలు, విమానాలు, అన్నీ లభిస్తాయి. అతనికి దేశ విదేశాలలో కూడ కీర్తి కలుగుతుంది. గాయత్రీ జపం చేసేవానికి రాజులు, రాక్షసులు, శత్రువులు, సర్పాలు, అగ్ని, జలము, వాయువు మరియు తీక్షమైన విషం కూడ ఏ మాత్రం హాని చేయలేవు. నాలుగు వర్ణాలవారు, నాలుగు ఆశ్రమాల వారు గాయత్రిని జపించి, సుఖశాంతులు పొందుతారు. ఎక్కడ గాయత్రి జపం జరుగుతుందో అక్కడ అగ్ని దేనిని నష్టపరుపలేదు. అక్కడి నుండి సర్పములు పరుగెత్తుతాయి. అక్కడ శిశువులు మరణించరు. ఈ గొప్ప వేద మంత్రమైన గాయత్రీ గుణ కీర్తనాన్ని ఎవరు వింటారో వారికి దుఃఖాలు తొలగి పరమగతి అయిన మోక్షం ప్రాప్తిస్తుంది. గోవుల మధ్యలో దీనిని పఠించితే గోసంతానం వృద్ధి అవుతుంది. వచ్చేటపుడు పోయేటపుడు, కార్యాన్ని ప్రారంభించే సమయం, ముగించే సమయం, ప్రత్యేకమయిన సమయాల్లో గాయత్రీ మంత్రజపం చేయవలసి ఉంటుంది. హే యుధిష్ఠిర ! మహర్షులు జపించే వానిలో ఈ గాయత్రీ జపం ఉత్కృష్టమయింది. సదా ఋషిలోకం ఈ మంత్రాన్ని జపించుతూ వచ్చారు. దీనిని గానం చేస్తూ వచ్చాడు. సమస్త రాజులు, సమస్త వీరపురుషులు, సమస్త పండితులు, సూర్యవంశీయులు లేదా చంద్ర వంశీయులు, రఘువంశీయులు లేక కౌరవ వంశీయులుగాని ఈ గాయత్రిని జపించి యశస్సు, ధనము, శక్తి, ఆనందమును పొంది యున్నారు. ఈ గాయత్రిని దేవతలు, సప్త ఋషులు మరియు ధ్రువుడు కూడ నిత్యం అభ్యసించారు. ఇది సర్వపాప విమోచన కరము, అశుభాలను తొలగించి సదా శుభాలను కలిగిస్తుంది" అని భీష్ముడు గాయత్రీ మంత్ర మహాత్మ్యాన్ని వివరించాడు.

గాయత్రి మహిమను గూర్చి బృహదారణ్యకోపనిషత్తు చెప్పినది:

"భూమి రన్తరిక్షం ద్యౌరిత్యష్టావక్షరాణి, అష్టాక్షరం హ వా ఏకం గాయత్ర్యైపదమ్,

ఏతదు హైవాస్యా ఏతత్; స యావదేష త్రిషు లోకేషుతావద్ధ జయతి యోఽస్మా ఏతదేవం పదం వేద ॥ -బృ. ఉ. 5-14-1.

భూమి, అంతరిక్షం ది+ఔ (ద్యౌః) అనేవి ఏనిమిది అక్షరాలు. గాయత్రిలో మొదటి పాదాన - తత్, స, వి, తుర్, వ, రే, ణి, యమ్ - అనే ఎనిమిది అక్షరాలున్నాయి. కాబట్టి గాయత్రి మొదటిపాదం ముల్లోకాలు- భూమి, అంతరిక్షం, దివం కనుక గాయత్రి మొదటి పాదాన్ని ఉచ్చరిస్తూ ముల్లోకాలను ధ్యానించాలి. ఇలా ప్రథమ పాదాన్ని ఎఱిగిన వాడు మూడు లోకాల్లో పొందదగినదంతా పొందుతాడు.

"ఋచో యజూంషి సామానీత్యష్టావక్షరాణి అష్టాక్షరం హ వా ఏకం గాయత్ర్యై పదమ్; ఏతదు హైవాస్యా ఏదత్, సయావతీయం త్రయీ విద్యాతావద్ధ జయతి యోఽస్యా ఏతదేవం పదం వేద ॥ బృ. ఉ. 5-14-2.

'ఋచః, యజాంషి, సామాని' అనేవి ఎనిమిది అక్షరాలు. గాయత్రి రెండవపాదం- భర్గో దేవస్య ధీమహి'లోనూ ఎనిమిది అక్షరాలున్నాయి. కనుక గాయత్రి రెండవ పాదం ఋక్ యజుస్సామములనే త్రయీవిద్య అనదగును. ఈ రెండవ పాదాన్ని ఉచ్చరిస్తూ వేదంలోని త్రయీవిద్యను ధ్యానించాలి. ఇలా గాయత్రి రెండవ పాద రహస్యాన్ని ఎరిగిన వారు త్రయీవిద్యయందు పొందదగిన దంతా పొందుతాడు.

"ప్రాణోఽపానో వ్యాన ఇత్యష్టావక్షరాణి; అష్టాక్షరం హ వా ఏకం గాయత్ర్యై పదమ్, ఏతదు హైవాస్యా ఏతత్, స యావదిదం ప్రాణి తావద్ధ జయతి యోఽస్యా ఏతదేవం పదం వేదబీ అథాస్యా ఏతదేవ తురీయం దర్శతం పదం పరోరజా య ఏషతపతిబీ యద్వై చతుర్థం తత్తురీయంబీ దర్శతం పదమితి దదృశ ఇవహ్యేషః; పరోరజా ఇది సర్వము హ్యే వైషరజి ఉపర్యుపరి తపతి, ఏవం హైవ శ్రియా యశసా తపతి యోఽస్యా ఏత దేవం పదం వేద ॥ బృ. ఉ. 5-14-3.

ప్రాణః, అపానః, వి+అనః (వ్యానః) ఈ మూడు పదాలల్లో ఎనిమిది అక్షరాలున్నాయి. గాయత్రి మూడవ పాదంలో - 'ధియోయోనః ప్రచోదయాత్' ఎనిమిది అక్షరాలున్నాయి. కాబట్టి తృతీయ పాదం ప్రాణ అపాన వ్యానములనవచ్చును. ఈ పాదాన్ని ఉచ్చరిం చుతూ ఈ మూడు ప్రాణాలను ధ్యానించాలి. ఇలా ఈ పాదాన్నెరిగి జపించేవాడు ప్రాణి సముదాయంలో పొందదగిన దంతా పొందు తాడు.

గాయత్రీలోని మూడు పాదముల వ్యాఖ్యానం పూర్తి అయింది. కాని గాయత్రికి సంబంధించిన పాదం ఇంకొకటున్నది. అది 'తురీయ', 'దర్శత', 'పరోరజా' అనబడు తుంది. 'తురీయ' మంటే నాల్గవది. 'దర్శత' అంటే కనబడుతున్నట్లుండేది. 'పరోరజా' అంటే ప్రకృతి కంటే పరమున ఉండేది. ప్రకృతి కంటె పరమున కనబడుతున్నంట్లుండే నాలుగవ పదం విశ్వము నందంతటా తపించేదే. ఇదే గాయత్రి యొక్క నాల్గవ పాదం. ఈ చతుర్థ పదం యొక్క ప్రతాపంవల్లనే ఈ విశ్వమంతా ఒకదానిపై ఒకటి గొప్ప తపస్సులో లీనమై ఉన్నాయి. ఈ తురీయ పదాన్ని ప్రభువును - భగవంతుని తపస్సున చూచేవాడు యశస్సుతో, శ్రీతో తపించి ప్రకాశిస్తాడు.

"సైషా గాయత్ర్యేతస్మిం స్తురియే దర్శతే పదే పరో రజసి ప్రతిష్ఠితా, తత్వైతత్ సత్యే ప్రతిష్ఠితమ్, చక్షుర్ వై సత్యమ్, చక్షుర్ హి వై సత్యమ్, తస్మాద్యదిదానీం ద్వౌ వివదమానా వేయాతామ్, అహమదర్శమ్, అహమశ్రౌష మితి, య ఏవం బ్రూయాదహమ దర్శమితి, తస్మా ఏవ శ్రద్దధ్యామ తద్వై తత్ సత్యం బలేప్రతిష్ఠితమ్, ప్రాణోవైబలమ్, తత్ప్రాణే ప్రతిష్ఠితమ్, తస్మా దాహుర్బలం సత్యా దోగీయ ఇతి, ఏవంవైషా గాయత్ర్య ధ్యాత్మం ప్రతిష్ఠితా, సా హైషా గయాం స్తత్రే, ప్రాణా వైగయాః, తత్ ప్రాణాన్తత్రే, తద్యద్ గయాంస్తత్రే తస్మాద్ గాయత్రీ నామ, స యామే వామూం సావిత్రీ మన్వాహ, ఏషైవ సా, సయస్మా అన్వా హ తస్య ప్రాణాం స్త్రాయతే ॥ -బృ. ఉ. 5-14-4.

గాయత్రి ప్రతిష్ఠ (గొప్పతనం) తన మొదటి మూడు పాదాల్లో లేదు. ఈ నాల్గవదైన తురీయ దర్శత, పరోరజి, పద - పాదంలోనే ఉంది. ఆ తురీయ పదం సత్యమున ప్రతిష్ఠి తమై ఉంది. చక్షువు సత్యము, చక్షువే సత్యము. అందువల్లనే ఇద్దఱు వ్యక్తులు నేను చూచాను, నేను విన్నాను అని వాదించుకుంటూ వచ్చి నప్పుడు 'నేను చూచాను' అని చెప్పేవానిమాటే సత్యమని మనం అంగీకరిస్తాం. గాయత్రి యొక్క 'దర్శత' నామంగల నాలుగవ పాదం విశ్వమున తపించుతూ కన్నులకు కనబడు ప్రభువు యొక్క దర్శత పదాన్ని స్మరింప జేస్తున్నదా ! అనవచ్చును. 'దర్శత'యే గాయత్రి చతుర్థ పదం సత్యపదం. సత్యం బలములోనే ప్రతిష్ఠితమై ఉంటుంది. సత్యము లోనే బలముంటుంది. అసత్యంలో ఉండదు. ఈ బలం భౌతిక బలమా ? కాదు బలము ప్రాణం. కనుక సత్యం బలమునందు, ఆ బలం ప్రాణము నందు ప్రతిష్ఠితమై ఉంది. ప్రాణశక్తి లేక బలముండదు. కనుకనే బలం సత్యం కంటే పెద్దది అంటారు. గాయత్రి అధి భౌతిక జగత్తున - బ్రహ్మాండములో ఉపాస కునికి ప్రాణశక్తి యొక్క మహత్వాన్ని చూపునట్లుగా, పిండమున - అధ్యాత్మమున కూడ గాయత్రికి అటువంటి ప్రతిష్ఠయే ఉంది. ప్రాణాలను 'గయ' అంటారు. శరీరములోని (గయ) ప్రాణాలను త్రాణరక్షణ చేస్తుంది కాబట్టి గాయత్రి అనబడుతుంది. గాయత్రి ధ్యానం నిజానికి ప్రాణాల - ఇంద్రియాల సంయమనం (నిగ్రహించడం) అనవచ్చును. ఆచార్యుడు శిష్యునికి - బ్రహ్మచారికి - ఉపనయన సమయంలో ఉపదేశించే సావిత్రి గాయత్రే. గాయత్రిని ఉపదేశించడమంటే శిష్యుని ప్రాణరక్షణ చేయడమని అభిప్రాయం. ఆ బ్రహ్మచారి తనలో నవజీవనాన్ని సంచారం చేయడం నేర్చుకుంటాడు.

"తాం హైతామేకే సావిత్రీ మనుష్టు భమన్వాహుః, వాగనుష్టుప్, ఏతద్వాచమను బ్రూను ఇతి, న తథా కుర్యాత్ గాయత్రీమేన సావిత్రీ మనుబ్రూయాత్, యది హ వా అప్యేవం విద్ బహ్వివ ప్రతిగృహ్ణాతి, న హైన తద్ గాయత్ర్యా ఏకం చ న పదం ప్రతి ॥

-బృ ఉ. 5-14-5

కొంతమంది అనుష్టుప్ ఛందస్సు గల సావిత్రిని (తత్ సవితుర్వృణీమహే, వయం దేవస్య భోజనం శ్రేష్ఠం సర్వధాతమం తురం భగస్యధీమహి) ఉపదేశించాలి అంటారు. కారణమేమంటే ఈ అనుష్టుప్ ఛందస్సు గల సావిత్రి నాలుగు పాదాలతో ఉండడం వలన అది వాణిరూపం కనుక దీన్ని ఉపదేశించాలి అంటారు. కాని అలా ఉపదేశింపకూడదు.

త్రిపదా గాయత్రీ - మూడు పదాలు గల గాయత్రే సావిత్రి అని మేము చెబుతాము. దానినే ఉపదేశించాలి. ఈ త్రిపద గాయత్రి యొక్క పైన వర్ణింపబడిన రహస్యాన్ని ఎఱిగినవాడు ఎంత గొప్ప దక్షిణ తీసికున్న ప్పటికి అది గాయత్రి యొక్క ఒక్క పదంతో కూడ సమానం కాదు.

స య ఇమాం స్త్రీం లోకాన్ పూర్ణాన్ ప్రతి గృహ్ణీయాత్, సోఽ స్యా ఏతత్ ప్రథమం పదమాప్నుయాత్, అథ యావతీయం త్రయీ విద్యా యస్తావత్ ప్రతిగృహ్ణీయాత్, సోఽ స్యా ఏతద్ ద్వితీయం పదమాప్నుయాత్, అథ యావదిదం ప్రాణి యస్తావత్ ప్రతిగృహ్ణీయాత్, సోఽ స్యా ఏతత్తృతీ యం పదమాప్నుయాత్, అథాస్యా ఏతదేవ తురీయం దర్శతం పదం పరోరజా యఏష తపతి, నైవకేన చనాప్యమ్ కుత ఉ ఏతావత్ ప్రతి గృహ్ణీయాత్ ॥

-బృ. ఉ. 5-14-6.

అంతటా నిండి ఉన్న ఈ మూడు లోకాలు (భూమి, అంతరిక్షం, దివము) ఎవరికైన లభించినప్పటికి అది గాయత్రి యొక్క ప్రథమ పాదాన్ని పొందడంలో సమాన మవుతుంది. మరొకనికి త్రయీవిద్య ప్రాప్తించినప్పటికి అది గాయత్రి - ద్వితీయ పదాన్ని పొందిన దానితో సమానమవుతుంది. ఇంకొకనికి సమస్త ప్రాణి జగత్తు లభించినప్పటికి అది గాయత్రి - తృతీయ పదాన్ని పొందిన దానితో సమానమవుతుంది. గాయత్రి యొక్క 'దర్శత' 'తృతీయ' 'పరోరజ' - విశ్వంలో తపించుతూ కనబడుతున్నది. అటువంటి చతుర్థ పదానికి ఏ భౌతిక పదార్థంతోను తులన చేయడానికి వీలుపడదు. దానికి సమానమైనదేదీ లేదని అభిప్రాయం.

"తస్యా ఉపస్థానమ్ - గాయత్ర్యస్యేక పదీ ద్విపదీ త్రిపదీ చతుష్పద్యపదసి, న హి పద్యసే । సమస్తే తురీయాయ దర్శతాయ పదాయ పరో రజసే, అసావదో మా ప్రాపదితి, యం ద్విష్యాత్, అసావస్మై కామో మా సమృద్ధీతి వా న హైవాస్మైన కామః సమృధ్యతే యస్మా ఏవ ముపతిష్ఠతే అహమదః ప్రాపమితి వా॥ -బృ ఉ. 5-14-7

గాయత్రి యొక్క ఉపస్థానం :

'ఓ గాయత్రీ ! త్రిలోకాలు నీకు మొదటి పదం. త్రయీవిద్య నీ రెండవ పదం. ప్రాణ, అపాన, వ్యానములు నీ మూడవ పాదం. అన్నింటిని ప్రకాశింపచేసే 'పరోరజ' 'దర్శత' రూపం నీ చతుర్థ పదం. ఇన్ని పదాలుండి కూడ నీవు పదాలు లేనిదానవు. నీవు తెలియబడవు. నీ నాల్గవదైన దర్శత - పరోరజ పదానికి నా నమస్కారం. నేను ద్వేషించేవారికి నీ పదం లభింపకుండుగాక ! అతని కోరికలు సఫలము కాకుండుగాక ! అని గాయత్రి రహస్యాన్నెఱిగినవాడు గాయత్రి ఉపస్థాన మొనర్చి - (గాయత్రిని సమీపించి - స్మరించి) తన శత్రువు యొక్క అభీష్టము - అతని దుష్కామనలు నెరవేఱ కూడదనీ, అతని సత్కామనలు కూడ తానే పొందాలని ప్రార్థించినట్లయితే ఆ గాయత్రీ విదుని ప్రార్థన నెరవేరుతుంది.

"ఏతద్ధ వైతజ్జనకో వైదేహో బుడిల మాశ్వత రాశ్విమువాచ, యన్ను హోతద్ గాయత్రీ విద్బ్రూథా అథ కథం హస్తీ భూతో వహసీతి, ముఖం హ్యస్యాః సమ్రాణ్న విదాం చకారేతి హోవాచ, తస్మా అగ్ని రేవ ముఖమ్, యది హ వా అపి బహ్వివాగ్నావ భ్యావధతి, సర్వమేన తత్సన్దహతి, ఏవం హై వైవం విద్మద్యపి బహ్వివపాపం కురుతే, సర్వమేవ తత్ సంప్సాయ శుద్ధః పూతోఽ జరోఽ మృతః సంభవతి ॥ -బృ ఉ. 5-14-8

ఒకనాడు విదేహరాజు జనకుడు అశ్వతరాశ్వ కుమారుడైన బుడిలునితో, ఇలా అన్నాడు. "నీవు నిన్ను గాయత్రీ విదు" చెప్పు కుంటున్నావు. కాని, ఏనుగు బరువులు మోస్తున్నట్లు నీవేల భావాన్ని మోస్తున్నావు ? సాంసారిక వ్యవహారాల్లో పడియున్నావు ?".

ఆ ప్రశ్నకు సమాధానంగా బుడిలుడు 'చక్రవర్తీ ! గాయత్రీ ముఖాన్ని నేనెరుగను' అనెను అనగా గాయత్రీ శరీరాన్నెఱుగునే కాని అతడు దాని ముఖాన్ని ఎరుగడు - గాయత్రిని చదివాడేగాని దాని రహస్యాన్నెఱుగడని భావం.

అది విని జనకుడతనితో ఇలా అన్నాడు. 'గాయత్రి ముఖము అగ్ని - గాయత్రిని గూర్చి మననము చేసేవాడివైతే నీవు అగ్ని ముఖుడవుతావు. అగ్ని యందేది వేసినప్పటికి దాన్ని భస్మము చేస్తుంది. అలాగే గాయత్రి యొక్క అగ్ని రూపాన్ని సిద్ధం చేసి కొన్నవాడు మిక్కిలి పాపంచేసేవాడుగా కనిపించినప్పటికి ఆ పాపాన్ని కూడ అతడు అగ్నిలాగా తినివేస్తాడు. భస్మము చేస్తాడు. శుద్ధుడు, పవిత్రుడు, అజరుడు, అమరుడు అవుతాడు. అని ఇలా గాయత్రీ మంత్ర మహిమను బృహదారణ్యకోపనిషత్తు వివరించింది.

గాయత్రి మహిమను గూర్చి మనుస్మృతి చెప్పినది :

అకారం చాప్యుకారం చ మకారం చ ప్రజాపతిః ।
వేదత్రయాన్నిర దుహద్ భూర్భువః స్వరితీతి చ ॥
-మను. 2-51

పరమేశ్వరుడు 'అ' కార, 'ఉ'కార, 'మ'కార సమన్వితమైన ఓం కారాన్ని, (పరమేశ్వర నామాల్లో ఉత్తమమైనదాన్ని) గాయత్రీ మంత్రం లోని భూః, భువః, స్వః అను వ్యాహృతి త్రయాన్ని మూడు వేదాలలోని సారరూపంగా వెలువరించాడు.

త్రిభ్య ఏవతు వేదేభ్యః పాదం పాదమదూ దుహత్ ।
తది త్యృచోఽ స్యాః సావిత్ర్యాః పరమేష్ఠి ప్రజాపతిః ॥ -మను. 2-52

అన్నిటికంటె గొప్పవాడైన పరమేశ్వరుడు 'తత్' పదంతో ప్రారంభమయ్యే సావిత్రీ మంత్రాన్ని (గాయత్రిని) దీనిలోని ప్రథమ పాద మైన 'తత్స' వితుర్వరేణ్యమ్', ద్వితీయ పాదమైన 'భర్గోదేవస్య ధీమహి', తృతీయ పాదమైన 'ధియోయోనః ప్రచోదయాత్' అనే మూడు పాదాల్ని మూడు వేదాలలో నుండి పిండి సారభూతమైనదిగా చేశాడు.

ఏతదక్షరమేతాం చ జపన్వ్యాహృతి పూర్వి కామ్ ।
సంధ్య యోర్వేదవిద్విప్రో వేదపుణ్యేన యుజ్యతే ॥
-మను. 2-53

ఈ ఓంకారాన్ని భూః, భువః, స్వః అను వ్యాహృతుల సహితంగా గాయత్రీ మంత్రాన్ని వేదపాఠకులైన ద్విజులు - బ్రాహ్మణ, క్షత్రియ, వైశ్య వర్ణస్థులు ప్రాతః సాయంకాలాల్లో జపించేట్లయితే వేదాధ్యయనంవల్ల కల్గే పుణ్యంతో కూడిన వారవుతారు.

సహస్ర కృత్వస్త్వభ్యస్య బహిరేతత్త్రికం ద్విజః ।
మహతోఽ ప్యేనసో మాసాత్త్వచే వాహిర్ విముచ్యతే ॥ -మను 2-54

ద్విజుడు ఈ మూటిని - ఓంను, వ్యాహృతులను, గాయత్రీ మంత్రాన్ని బాహ్యంగా ఏకాంతంలో వేయిమార్లు ప్రతిదినం జపించేట్లయితే మహాపాపాల నుండి కూడ ఒక్క మాసములో పాము కుబుసాన్నుండి విడివడునట్లు విడిబడతాడు అన్నది మనుస్మృతి.

Dateof Publication 2nd & 17th of every Month, Date of posting 3rd and 18th of every month
आर्य जीवन 03-12-2018 Registered-Reg. No. HD/783/2018-20 RNI No. 52990/93

ఆర్య జీవన్

హిందీ - తెలుగు ద్విభాషా పక్ష పత్రిక

Editor: Vithal Rao Arya, M.Sc. LL.B., Sahityaratna
Arya Prathinidhi Sabha AP-Telangana, Sultan Bazar, Hyderabad-95.
Phone No. 040-24753827, 66758707, Fax: 040-24557946.
Annual Subscription Rs. 250/- సంపాదకులు - విఠల్ రావు, మంత్రి సభ

To,

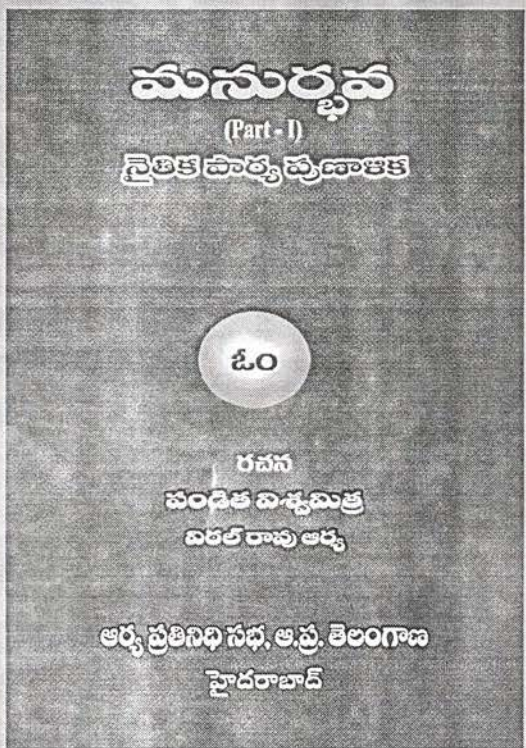

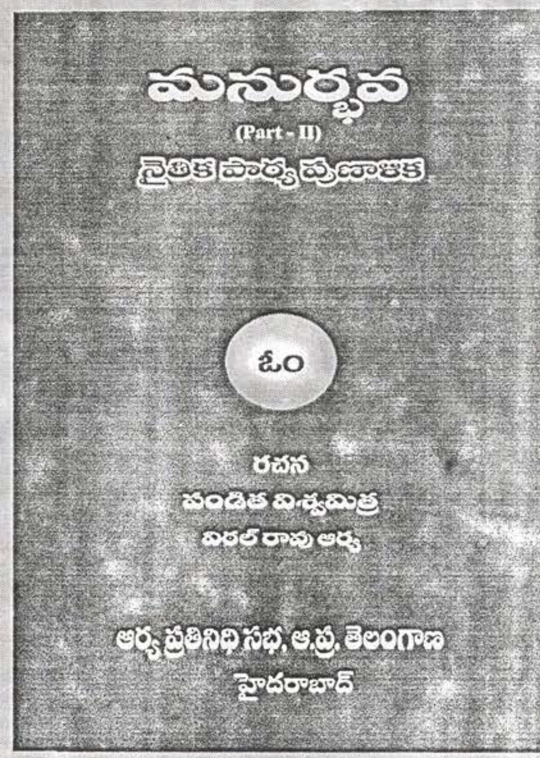

ఆధునిక యాంత్రిక యుగములో విద్యార్థుల నైతిక విలువలను పెంపొందించడానికి పండితుల ద్వారా
శిశు నుండి ఏడవ తరగతి వరకు పాఠ్యప్రణాళికను రూపొందించడం జరిగినది. ఈ పాఠ్యప్రణాళిక ద్వారా
విద్యార్థుల బౌద్ధిక వికాసాన్ని మరియు వైదిక సంస్కృతి యొక్క ఔన్నత్యాన్ని కోరుకుంటూ
ఆచరణాత్మక నిర్మాణం కొరకు
శ్రీ పండిత విశ్వమిత్ర గారు మరియు ప్రొ॥ విఠల్ రావు ఆర్య గారు రచించిన
"మనుర్భవ" పుస్తకములను (1-2 భాగాలను)
ఆర్యప్రతినిధి సభ ఆ.ప్ర.-తెలంగాణ ద్వారా సప్తమ ముద్రణ చేయించి దీపావళి పర్వదినమున
ఆవిష్కరణ సభాధ్యక్షుల ద్వారా చేయబడినవి.

*ఈ సందర్భమున ఈ రెండు పుస్తకాలకు 20 శాతం తగ్గింపు మకరసంక్రాంతి వరకు ఇవ్వడం జరుగుతున్నది.
కావున జనులు అధిక సంఖ్యలో ఈ సదవకాశాన్ని సద్వినియోగ పరచుకొనగలరు.*

THE VIEWS & THE NEWS PUBLISHED IN THIS ISSUE MAY NOT NECESSARILY BE AGREEABLE TO THE EDITOR
Editor : Vithal Rao Arya ● Email : acharyavithal@gmail.com, Mobile : 09849560691
సంపాదకులు : శ్రీ విఠల్‌రావు మంత్రి సభ, ఆర్యప్రతినిధి సభ ఆ.ప్ర.-తెలంగాణ, సుల్తాన్‌బజార్, హైదరాబాద్-95. Ph: 040-24753827, Email : acharyavithal@gmail.com
संपादक : श्री विट्ठलराव मंत्री सभा ने सभा की ओर से आकृति प्रिन्टर्स में मुद्रित करवा कर प्रकाशित किया ।
प्रकाशक: आर्य प्रतिनिधि सभा आं.प्र.-तेलंगाना, सुल्तान बाज़ार, हैदराबाद तेलंगाना-95.